श्री स्वामिनारायण मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख • पूर्ण अंक २१५ • अंक जून-२०२५

Volume no. 18, Issue No. 215 June 2025

आम्रोत्सव

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१. Publisher: Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad- 380001 Rs.5/-

मोटप (बहनो के) नये मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा करते और सभा को आशीर्वाद देते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

रापर (कच्छ) नये मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा करते और ठाकुरजी का अभिषेक करते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

सिमेज (धोलका प्रदेश) नये मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा करते और सभा में आशीर्वाद देते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १८ ● अंक : २१५ ● जून-२०२५

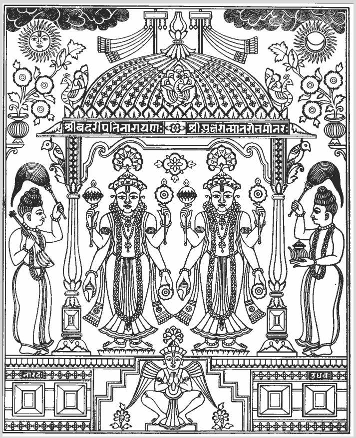

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८

श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

श्री स्वामिनारायण म्युजियम

नारायणपुरा, अहमदाबाद.

फोन : २७४९९५९७, २७४१९५९७

www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८

श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी

आज्ञा से

तंत्रीश्री

स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी

(महंत स्वामी)

मो. ९३१३७१९२३२

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,

अहमदाबाद-३८० ००१.

मो. ९३१३७०६०९५

magazine@swaminarayan.in

www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये

E-mail :

magazine@swaminarayan.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अ नु क्र म णि का

०१. अस्मदीयम् ०४

०२. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा ०५

०३. ''समैयो'' के उपलक्ष्य में शिक्षापत्री ०६

०४. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुख से आर्शीवचन ०७

०५. भगवान के भक्त है, वे तो भगवान के भजन हेतु जागते है ११

०६. अपने हरि मंदिर तथा प्रसादी के स्थान (पोर वावोल देश) श्री स्वामिनारायण मंदिर वावोल १२

०७. श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से १३

०८. भक्ति सुधा १४

०९. ''समैयो'' के उपलक्ष्य में २१

१०. सत्संग समाचार २५

अस्मदीयम्

प्रिय भक्तो,

आप लोग कभी एक चित्त होकर सोचे है क्या ? कि महाराजने अपने हाथो से कोई शास्त्र की रचना नही किये । महाराजने माना भी है।

महाराज केवल अपने कर कमलो से केवल 'शिक्षापत्री' लिखे है । क्यो लिखना पडा ? ज्ञात है ? महाराज तथा उनके 'आश्रितो' के साथ अधिक लगाव था । आश्रितो की अधिक चिंता थी । मेरे आश्रित, निजाश्रितान, मद्उपाश्रितैः मामश्रितै ? इस प्रकार बार चार मेरा..... मेरा कहते है।

जिस पर अधिक प्रेम हो उसकी भलाई सोचना यह अधिक स्वाभाविक है । तो मेरे आश्रितो का कल्याण कैसे हो सके ? उनका कल्याण कैसे हो ? इसके लिये शिक्षापत्री लिखे ।

प्रातः कब जागना, कौन सी क्रिया करना, व्यवहार कैसे करे, कहाँ पर कैसा व्यवहार करने से लेकर, इस जीव, माया, ईश्वर, परब्रह्म क्या है सब कुछ बता दिये ।

महाराजने हम सभी को आज्ञा किये है कि विशेष करके उपासना को स्पष्ट रुप से समझाये है । कोई मित्र आप की भलाई सोचे तो उसे अच्छी सलाह दे । लेकिन ये सर्वावतारी पूर्ण पुरुषोत्तम ! कैसी सलाह लिख कर दिये है कि कुछ शेष नही रह जाता है। वह इस लोक तथा परलोक मे भी सुखी होगा । इस शिक्षापत्री के आदेश का पालन करके नर-नारी व्यवहार करे । नियमका दृढता से पालन करे । वे सभी धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को अवश्य प्राप्त करेगा । ऐसा स्वयं वरदान शिक्षापत्री में दिये है।

अब प्रश्न होता है कि 'हम सभी श्रीजी महाराज के 'आश्रित' है । महाराजने हमे जीवन जीने की सलाह और आज्ञा दिये है। उसका पालन मन की ईच्छा है । मन को मानकर व्यवहार करे ? सम्प्रदाय के मुख्य अभेद दो स्तम्भ है । आज्ञा और उपासना ।

समैया के उपलक्ष्य में गाँव-गाँव मे हरिभक्त, कोठारी, श्री नरनारायणदेव युवक मंडल इस प्रकार प्रत्येक अपनी कर्तव्य को समझकर शिक्षापत्री सत्संग सभा, विशेष प्रवृत्ति के भागरुप मे सामाजिक प्रवृत्ति में स्वच्छता अभियान, वृक्षारोपड, हर व्यक्ति को नियम लेना चाहिए । इसी प्रकार गाँवो तथा शहरो के हरिभक्त को इन प्रवृत्तियो से जुडने के लिये मेरा अनुरोध है।

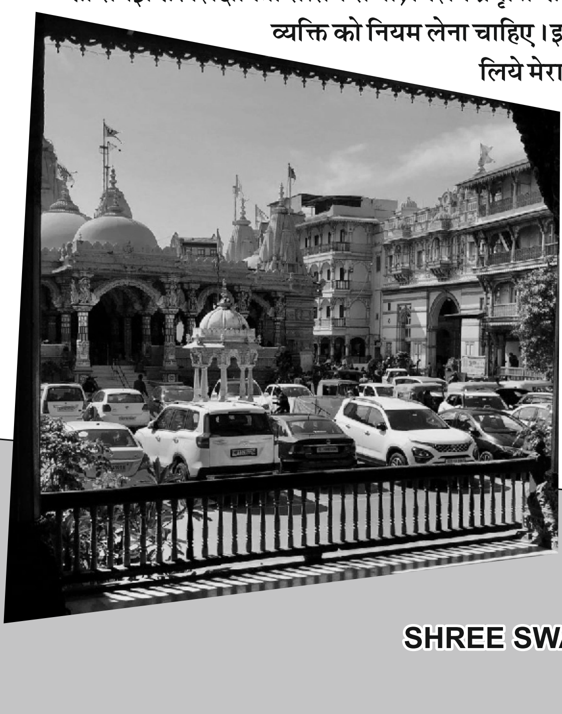

शिक्षापत्री में आज्ञा लिखी गयी है । और उपासन के लिये स्वयं अच्छे मंदिर बनवाये । इस मंदिर मे स्थापित देव की उपासना करे । शिक्षापत्री का पालन करे । हमारा जीवन सफल हो जायेगा !

आने वाले अषाढ सुद-१५ गुरु पूर्णिमा के दिन श्री नरनारायणदेव देश के सभी हरिभक्त कालुपुर अपने मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के गुरु पूजन मे अवश्य आये । इसके लिये आप सभी आमंत्रित है।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी पुरुषोतमप्रकाशदासजी
का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कार्यक्रम की रूपरेखा

(मई-२०२५)

१-२ श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज (कच्छ) पाटोत्सव पर पधारना ।

३ श्री स्वामिनारायण मंदिर माणसा पाटोत्सव पर पधारना ।

४ श्री स्वामिनारायण मंदिर बोपल पाटोत्सव पर पधारना ।

६ श्री स्वामिनारायण मंदिर मोटप (बहेनोका) पुनः मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा पर पधारना ।

८ कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में संत महादीक्षा स्वयं के करकमलो से पूर्ण किये ।

९ श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहेनोका) भायला में मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा पर पधारना ।

११ थी १२ श्री स्वामिनारायण मंदिर रापर (कच्छ) मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारना ।

१७ श्री स्वामिनारायण मंदिर धोलका १९८ वाँ वार्षिक पाटोत्सव के अवसर पर वहाँ से सिमेज गाँव श्री स्वामिनारायण मंदिर की पुनः प्राण प्रतिष्ठा पर पधारना ।

२१ थी श्री स्वामिनारायण मंदिर नेशवील (अमेरिका आई.एस.एस.ओ.) मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारना । पारसीपनी (आई.एस.एस.ओ.) मंदिर १० वे पाटोत्सव के अवसर पर पधारना ।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रूपरेखा

(मई-२०२५)

२ श्री स्वामिनारायण मंदिर उनावा पाटोत्सव के अवसर पर पधारना ।

१२ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर पूनम सत्संग सभा मे पधारना ।

१९ थी २६ श्री स्वामिनारायण मंदिर नेशवील (आई.एस.एस.ओ. अमेरिका) मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा पर पधारना । पारसीपनी (आई.एस.एस.ओ. अमेरिका) मंदिरना दशाब्दी पाटोत्सव के अवसर पर पधारना ।

समैयो के उपलक्ष्य में ॥ शिक्षापत्री ॥

॥ व्यभिचारो न कर्तव्यः पुम्भिः स्त्रीभिश्च मां श्रितैः ।
द्यूतादि व्यसनं त्याज्यं नाद्यं भङ्गादि मादकम ॥१८॥

हमारे आश्रित किसी भी पुरुष और औरत को व्यभिचार नही करना चाहिए । और जुआ आदि जो व्यसन है उसका त्याग करना चाहिए । भाँग, अफीम, गाँजा आदि मादक द्रव्यो का सेवन नही करना चाहिए । उसे खाना-पीना नही चाहिए ॥१८॥

विवेचना : परस्त्री परिग्रह, जुआ तथा मद्यपान आदि दुष्कर्म सभी धर्मो एवम् शास्त्रो में निषेध रुप से वर्णित है। यहाँ पर भगवान ऐसा कहते है कि, पुरुष पर स्त्री गमन तथा स्त्री को पर पुरुष गमन नही करना चाहिए । विशेष करके जो लोग स्वामिनारायण आश्रय स्वीकार्य किये हो । वे लोग इस पाप से दूर रहे । मन मे भी पर स्त्री के प्रति काम भाव नही रखे । महाभारत में कहा गया है कि –

''मनसापि प्रदुष्टेन ये पश्यन्ति परस्त्रियम् ।
रोगार्ताः ते भवन्तीह नरा दुष्कृतिकारिणः ॥

हारित स्मृति से पर स्त्री गमन ब्रह्महत्या के समान माना गया है । मन से भी व्यभिचार वर्जित है । यहाँ पर दूषित मनवाला कहे कि वैश्या तो परस्त्री तो नही है तो इसमें दोष है ? उल्टे उसमें और अधिक दोष है । धर्मशास्त्र में परस्त्री, बंधकी को त्याग किया जाता है । इसमें दण्ड भी निश्चित किया गया है।

आज पश्चिम की संस्कृति का प्रभाव, मोबाईल, चलचित्र तथा खुले वातावरण के कारण ऐसी स्थिति बनी है । युवको में लैंगिक अनुशासन कुछ अंश में दिखाई देता है । जिस प्रजा में लौगिक अनुशासन नही होता है । वह प्रजा अवस्य नष्ट हो जाती है । मध्यकाल में फ्रांस देश बहुत शक्तिशाली था । लेकिन फ्रेच प्रजा में लैंगिक अनुशासन कम होने से आज प्रजा पिछड गयी है । स्त्री और पुरुष वैवाहिक जीवन अच्छे से बिताये तो यह समाज के लिये लाभ दायक रहेगा । संसार का त्याग करने वाले और वैराग्य लेने वाले के लिये और उच्च आत्मा के लिये यह प्रश्न नही है । आपस में साथ रहने वाले स्त्री–पुरुष को अनैतिक आचरण नही करना चाहिए । तथा चरित्र की रक्षा करना चाहिए । जिस से सामाजिक व्यवस्था बनी रहे । तथा प्रजा का तेज बना रहे ।

प्राचीन समय में आर्यो में जुआ खेलने का भारी व्यसन था । ऋगवेद में एक सूक्त है । इसमे जुआरी अपने अनुभव को कहता है । कैसे वह गरीब हो गया । युधिष्ठिर और नल प्रतापी राजा स्वयं इस नशा से ग्रसित थे । तथा इससे प्रभावित भी हुए थे । जुआ अवसर का दूषित तत्व रखता है । अनिश्चित वस्तु द्वारा अपने भाग्य को निर्धारित

(पेईज नं. १०)

श्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुरव से आर्शीवचन

– संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा
(हीरावाडी-बापुनगर)

भुज मंदिर, ४०१ समूह श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण एवम् नारायण यज्ञ के अवसर पर ता. ०३-०४-२०२५ : आदरणीय संतो एवम् प्रिय हरिभक्तो, सबको जय स्वामिनारायण । अधिक खुशी की बात है कि असंख्य हरिभक्तो की ईच्छा से संकल्प से और संतो की प्रेरणा से प्रत्येक वर्ष समूह भागवत कथा का आयोजन होता है।

महंत स्वामी ने जो कहा वह सत्य है । मुझे अच्छा लगा । मै मुख्यता मानता हूँ । आज पितृ हो या हमारे माता-पिता उनके संस्कारो को लेकर यहाँ पर हम सभी एकत्र हुए है । उनके कल्याण करने की क्षमता अपने में नही है ? आप कर सकते है ? मै भी नही कर सकता हूँ । सत्य तो यह है कि अपने पूर्वज तथा विशेष करके कच्छ चौबीस का ईतिहास है । हम भूतकाल की बात करे तो, अपने माता-पिता (पैरेन्टस) परदादा-परदादी (ग्रैंड फादर-मदर) अपने भूख को मारकर अपने परिवार को सुखी रखे थे । सत्संग सुरक्षित रहे । ये लोग जहाँ पर भी गये सत्संग की सुरभा भी किये । चौवीस का ही था । अन्य गाँव के हो । हम सभी का हित हो । इसके लिये अधिक श्रम किये है।

यह गर्व का विषय है । अपने इस प्रांत के हरिभक्त सर्व प्रथम विदेश गये । जब कुछ सुविधा नही थी । किसी के कंधे पर सिर रखकर रोने की जगह भी नही थी । लोग मजदूरी का कार्य करते थे । कडिया – इट भट्ठे पर श्रम किये है । आज करोडो रुपया दान देते है । ये लोग प्रतिदिन मजदूरी किये है । भगवान इन सभी को स्वस्थ रखे । इसलिये सुखी हुए। वास्तविकता यह है कि यह उत्सव अपना है।

इस सभा में जो लोग बैठे है । जो घर पर बैठे है । उत्सव देख रहे है । उनके संकल्प को गिने तो ४५१ से अधिक हो गया है । सभी को धन्यवाद, जो आज देव के साथ जुडकर इस देव के सानिध्य में अपने माता-पिता तथा दादा-परदादा के ऋण से मुक्त नही हो सकते है । उन्होने जो दिया है । उसी के कारण से उत्सव है । यह अपने नंद संतो की बात है, गुणातीतानंद स्वामी के शब्द है कि गुरु आठ आने का पालन करे तो शिष्य को चार आने का पालन करना चाहिए । बुजुर्गो ने पालन किया है । इस कारण से अपने मे अवशेष (रेसिडूअल) बचा है । हमारे पास आज सुविधा है । उस समय सुविधा नही थी तो भी साम्राज्य बनाये थे । भगवान को रखकर आज अच्छा

आयोजन हुआ है। आज उन पूर्वजो को धन्यवाद है।

आप के उन बडो को आज याद रखे। नई पीढी का इसमें लगाव नही है। पुरानी बात करने पर लोग कहेगे की आप वृद्ध हो गये है। एक ही बात तीन बार पुनरावर्तन करने पर लोग कहेगे कि यह रट्टा कर रहा है। हमे यह बात भूलना भी नही है। जो अपना भूतकाल भूल जाता है। उसका भविष्य नही रहता है। हमे इसका ध्यान अवश्य रखना चाहिए। महाराजने कहा है कि हम सब किस लिये आये है। क्या कर रहे है ? और क्या करना आवश्यक है। यह ज्ञान रखने वाला व्यक्ति बुद्धिशाली से भी अधिक बुद्धिशाली है। हम सभी भाग्यशाली है कि हमे ऐसा सत्संग मिला है। देव का सानिध्य मिला है। ये संत मिले है। ये हरिभक्त मिले है। सांख्ययोगी बहने है। बच्चे बचियाँ है। संस्कार की परम्परा बनी हुई है।

अभी स्वामीजी ने बताया, हमारे विचार मे आया, काफी समयपूर्व संतोने बात की भी कि अहमदाबाद में शिक्षापत्री का उत्सव हो। इसके पहले भुज में हो भुज, मूली और अहमदाबाद, पूरा अहमदाबाद देश हुआ। अहमदाबाद देश एकत्र हो तो हमे गर्व होगा कि हममें कितनी शक्ति है। हमारे भगवान कैसे है। बडी से बडी बात यह है कि अहमदाबाद देश में भगवान के अलावा कोई विशेष नही है। यह बात सत्य है। यह संत दिखाते है। भगवान को पहचनवाते है। सब कुछ भगवान से हे। अभी अमृतसर से एक भक्त आये थे। बोले कि मुझे आशीर्वाद दे। मैने कहा मैं कभी आशीर्वाद नही देता हूँ। भगवान के आगे हाथ जोडकर प्रार्थना करता हूँ कि हमारा यह परिवार सदा सुखी रखे। आप सभी लोग हमारे परिवार है। पूरे नरनारायणदेव देश, अहमदाबाद देश सुखी रहे। यह शांति हमेशा बनी रहे।

और यह प्रतीक है कि अपने शिक्षापत्री का उत्सव भुज से शुरु हुआ है। अहमदाबाद में पूर्णाहुति होगी। आप को बार-बार फ्लाईट में धक्का नही खाना पडेगा। चार दिन में भुज, मूली तथा अहमदाबाद में दर्शन हो सकता है। आप लोगो की व्यवस्था के लिये विचार आया कि और संतो से हमने बात किया कि आप ऐसा करे जिससे अपने अहमदाबाद देश कितना विकास किया है। विस्तार क्या है ? सभी को ज्ञात हो। अहमदाबाद के महंत स्वामीने कहा कि यह सत्य है। शुकदेव स्वामीने भी अपने सेवाश्रम की बात किये। अभी राज्य सभा में कुछ चल रहा है। सब अच्छा-अच्छा बोलना है। यह तो प्रजा है। आप ५०% प्रजा को खुश कर दे तो पूरी दुनिया खुश हो जायेगी। अपना सिद्धान्त सत्य है। परम्परा सच्ची है। पुनः यही खेल करना है। फिर भी आज इतना कार्य हो रहा है।

अभी प्रातः मुझे वशराम बापा के पुत्र जादवभाई जो बलदिया - मानकुँवा के ट्रस्टी है। उन्होने आहीर भाईयो के कई सामाजिक कार्य को जानकारी देकर बोले ! हमे कुछ बडे लोगो से मिलाना है। मैने कहा हम अवश्य आयेगे। महाराज कोई जाति, लिंग भेग भाव देव-देवी में अन्तर नही बताये है। यह भूत बाद में आया है। एक बात हमे पहेली भी कहे है कि समय से पहले पात्रता से अधिक मिल जाने पर पचता नही है। कभी-कभार समस्या उत्पन्न हो ही जाती है। यह समस्या अहमदाबाद देश का नही होता है। शेष कुछ दिन के बाद कुछ नया आ ही जाता है। क्या बात स्वामिनारायण सम्प्रदाय को क्या कर देना चाहते है। यह सब हमे ज्ञात नही होता है। मै पेपर तथा न्यूज नही सुनता हूं। लोग सूचना देते है। सत्य तो यह है कि हमे प्राप्त भगवान हमारे आराध्य है। जिसको जो भगवान मिले है वे उनके आराध्य है। पंचायत बिना हमे भजन करना चाहिए। सभी आदरणीय है। सभी को प्रेम करो। यही स्वामिनारायण भगवान ने सर्वजीव हितावह का सिद्धान्त

दिये है। सभी जीवो के कल्याण हेतु केवल अपने लोगो के लिये नही कहे है। जीव लिखे है। जीव से जुडे जूये, चिटा, चीटी, काकरोच, खटमल से लेकर पर्यावरण ये सभी वस्तु सभी का ध्यान देना है। एकादशी के दिन खेत में बैल को जोतना नही है। क्योकि उसे छुट्टी मिलती है। ये लोग भूल गये है। हम सभी भाग्यशाली है कि हमारे में क्षेपक बाते नही आती है। हमारे पास मूल ग्रंथ है। यह गर्व की बात है। यह बात आयी इसलिये कहनी पडी है। किसी के लिये यह बात नही है।

आनंद की बात यह है कि हम लोगो को जो विरासत मिली है। यह परम्परा से आई है। जिसे हमे बचाकर रखना है। दूसरी पीढी को यह वातावरण मिले। यह आवश्यक है। जिसका प्रभाव २.४% तो होगा ही। शायद ०.५% ही हो। रसोई मे जाकर लड्डू खा आये। जैसा अन्न वैसे डकार आती है। जैसा श्रवण ऐसा विचार। जैसा दृष्टि ऐसा विचार आता है। ये सभी वस्तुए आवश्यक है।

भुज मंदिर कई वर्षो से प्रत्येक वर्ष समूह भागवत शुरु किये है। मै भी पहले पारायण से आता हूँ। इसमें सभी हरिभक्तो का संकल्प होता है। देश-विदेश से तन्जानिया से केन्या, लंडन, बोस्टन, कोलोनिया आस-पास से आप लोग एकत्र हुए है। सभी को धन्यवाद है। आप की श्रद्धा को नमन है। आप सभी भगवान के बनकर रहे है। यह सब से बडी बात है। दूसरे जगह पर नही जाना है। कोई भी कष्ट आये तो हनुमानजी के पास जाना यह महाराज को कही बात है। उनका पाठ करना चाहिए। शेष दूसरे चक्कर में नही पडना चाहिए। यह सीरीयस बात है। इसमें पड गये तो समाप्त हो जायेगे। मैं यह सीधी बात कह रहा हूँ। भूल से भी अंधश्रद्धा पर विश्वास नही करे। को कुछ नही होगा। अंधश्रद्दा का कुछ अंत नही है। आप सभी प्लेन में आये है। क्या पायलट देखकर बिना न उडाये था। ऐसा देखे तो प्लेन समय से उडे ही नही। आज हम सभी अहमदाबाद से आये क्या नक्षत्र देखे थे ? शायद कल आते या नही भी आते। ग्रह नक्षत्र एकत्र होते आते ! जंतर-मंतर से कोई महान आदमी नही बनता है। ऐसे जाल में उलझना नही चाहिए।

एक उदाहरण बताता हूँ। अभी चौबिसी का कोई हरिभक्त आया। महंत स्वामी आफिस मे थे। मुझसे बोला कि मेरी लडकी या बहन जो भी है ज्ञात नही है। वह दस वर्ष से पितृ को परेशान कर रही है। मैने कहा उसे कोई परेशान नही करता है। एक डाक्टर से एपान्टमेन्ट ले लेते है। जाकर मिल लेना। मेरे पास ५० उदाहरण है। मस्तक मे थोडी नमक (क्षार) की आवश्यकता हैं। मगज मे नमक की कमी से मानसिक संतुलन खराब हो जाता है। इसमे दवा की आवश्यकता होती है। किसी को गलत मार्ग पर नही ले जाना चाहिए। आप चाहे तो अच्छे साईकोथेरेपिस्ट का सम्पर्क करा दे। शेष धागा अक्षत से ठीक हो जाये तो दुनिया चले नही।

समाचार पत्र के अंदर छोटा सा विज्ञापन आता है। मै पेपर नही पढता हूँ। अभी एक बार देखा। जो पेपर पढते होगे। वह अवश्य देखे होगे। उसमें लिखा रहता है कि आप की शादी हो जायेगी। आप के अन्य कार्य हो जायेगे। वशीकरण हो जायेगा। उसका खराब हो जायेगा। आप का अच्छा हो जायेगा। हम सब ठीक कर देगे। आप सब कुछ सिद्ध करते है तो उसका विज्ञापन क्यो देते है। पूरा समाचार पत्र ही निकालो। सोचे ! यह सामान्य ज्ञान की बात है। आप यहाँ पर सेवा देते है। सीने के उपर हाथ रखकर कहो आप मुझे कहे। यहि मनुष्य के पास इतनी शक्ति है तो सब कुछ करके भगवान बन जाता। भारत देश पूरा आप ही चला रहे हो। यह सब नाटक है। महाराज

इन सब बातो से हम सभी को दूर रखे है। अपने कल्याण के लिये नरनारायणदेव स्थापित है। इनके चरणो से सिर झूकाने से सब कुछ अच्छा हो जाता है। यह सत्य बात है। मुझे लाकर कोई दिखाये हम अच्छा कर देगे। खराब कर देगे यह सम्भव ही नही है। मै गारन्टी देता हूँ। और चुनौती भी देता हूँ। किसी के बाप मे शक्ति नही है।

जिसके बाप इतने बडे है। उसका क्या कोई खराब कर सकता है। यह सत्य है। हमारा भगवान के उपर विश्वास रहे तो कोई बाल टेडा नही कर सकता है। हम कमजोर हो गये है। दिमाग लोग खराव कर देते है। यह गम्भीर विषय है। कई जगह पर यह परम्परा चल रही है। अभी इसी प्रकार के विषय पर भुज के संतो ने उसे बाहर निकाल दिया था। जिसे ज्ञान है वह जान गये होगे। सत्य मे यह अच्छी बात नही है। भगवान के अलावा कोई कल्याण नही कर सकता है। अपने आराध्य देव को माने। वही कल्याण करेगे। इस चक्रव्यूह से आज तक कोई निकला नही है। मोक्ष नही मिलेगा। यह रोग ऐसा है जिसका गुणन तेजी से होता है। इससे Covid कमजोर है। Covid अच्छा है। यह खराब है। इस बात पर ध्यान नही देना चाहिए। बहने विशेषकर इस बात पर विशेष ध्यान दे। भगवान के प्रतिश्रद्धा और निष्ठा रखे। इसके अलावा कुछ न ही बात करे। संतो ने कथा का प्रबन्ध किया है। कोई बात नही आयी। अपने देव सर्वोपरि है। जिसके आराध्य देव है। वह उसके लिये सर्वोपरी है। हम लोगो को नरनारायणदेव मिले है। यह आनंद और गर्व की बात है।

अच्छा कार्यक्रम पूर्ण हुआ। सभी ने लाभ लिया है। लोग दूर-दूर से आये है। नरनारायणदेव आप के परिवार का मंगल करे। छोटे-बडे संकल्प पूरे हो ऐसी नरनारयणदेव के चरणो में प्रार्थना है।

(अनु. पेईज नं. ६ से आगे)

करना मूर्खता है। जीतने वाला तुरंत हार जाता है। हारा हुआ दो गुना बल से खेलता है। पुनः स्वयः गरीब हो जाता है। परिवार भूख से मरता है। ऐसी खराब आदत नही करना चाहिए।

जुआ के बाद मृगया, शराब, वृथाभ्रमण आदि के नशे को छोड देना चाहिए।

अन्ततः इस श्लोक मे कहा गया है। भाँग जैस मादक पदार्थ को नही खाना चाहिए। इसके प्रयोग से चित्त भ्रमित होता है। विवेक बुद्धि नष्ट हो जाती है। अच्छे कार्य नही कर सकते है। इससे लोग पतन मे जाते है। नारद स्मृति मे कहा गया है।

''न भक्ष्यं मादकं किंचित चित विक्षुमकृत हितन''

द्यूत व्यसन के अन्दर मादक द्रव्य का प्रयोग भी आ जाता है। 'स्त्री द्यूतं मृगया मद्यम्' इत्यादि मे, कुछ लोग शराब-भाग बडेपन के लिये प्रयोग करते है। धर्म के नाम पर भी खाते है। उसे भी नही खाना चाहिए। यह मादक पदार्थ शरीर को क्षति पहुँचाते है। तथा मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करते है। धार्मिक रुप से नशीले पदार्थ मना है। सरकार भी शराब बंदी की है। धर्म राज्य के अनुसार भी नशा पर रोक है। नशे से दूर होने पर प्रजा देश का सर्वागीण विकास होता है। अध्यात्मिक चेतना आती है। इस श्लोक मे समाज के श्रेष्ठ मार्ग का स्पष्ट वर्णन किया गया है।

भगवान के भक्त है, वे तो भगवान के भजन हेतु जागते है

- अतुल पोथीवाला (मेमनगर-अहमदाबाद)

शिक्षापत्री तो श्रीहरि का वांग्मय स्वरुप है । तो श्रीमद् भगवत् गीता श्रीकृष्ण परमात्मा के वाणी का हृदय है। और वचनामृत की बात निराली है।

वचनामृत में श्रीहरिने भगवत गीता के कई श्लोको का रेफरेन्स लेकर सरलता से समझाये है । और इसके द्वारा धर्म, ज्ञान, भक्ति, वैराग्य का अच्छे से वर्णन किये है । इस अर्थ में वचनामृत श्री स्वामिनारायण सम्प्रदाय का अति मूल्यवान संदर्भ-ग्रंथ कह सकते है । इसकी विशेषता यह है कि जब-जब आप वाचन, मनन और प्रयोग करेगे तो हर बार नया ही कुछ ज्ञात होगा ।

जैसे कि श्रीमद् भगवतगीता अध्याय दो श्लोक संख्या ६९ की बात करे तो

या निशा सर्वभूतानां तस्यां श्रागर्ति संयमी
यस्थां श्राग्रति भूतानि सानिशा पश्यतो मुने ॥

हिन्दी में अनुवाद करे तो ''जो (ज्ञानदशा) सभी प्राणियो की रात्रि है। इस में संयमी पुरुष जागता है। और जो (भोगेच्छा) में जीव जगता है । (वह परमात्मा को देखते) सुनि (संयमी पुरुष) की रात्रि है।

श्रीहरिने इस श्लोक को वचनामृत में दो बार उल्लेख किये है । श्री गढडा प्रथम प्रकरण के ५० वे में श्रीहरि कहते है । ''जिस भगवान का भजन करना उसमे तो संसार के जीव की बुद्धि रात्रि में अंधकार युक्त होती है । कहने पर भगवान की भजन नही करते है । जो भगवान के भक्त होते है वे भगवान के भजन के बारे में सचेत रहते है। वह लगातार भगवान की भजन करता है।

इस श्लोक का अर्थ श्रीहरि इस रुप में समझाते है।

''शब्द'' स्पर्श रुप, रस और गंध इन पाँच विषय से जीव की बुद्धि जागृत रहती है । भगवान का भक्त विषय-वासना से दूर रहता है।

इस प्रकार अपने कल्याण के लिये सावधानी पूर्वक प्रयोग करते है। उसे श्रीहरिने कुशाग्र बुद्दि वाले कहे है।

श्री गीता के इसी श्लोक को गढडा मध्य प्रकरण २० में भी लेकर सभा में समझाते है। वे कहते है कि :

''जिस के बारे में मूत प्राणी मात्र सोये है उस बारे में (भगवान के स्वरुप की तल्लीनता वाली ज्ञान दशा) संयमी पुरुष (भगवान के भक्त) जागते है। औ जिस बारे में (विषय भोग की लालसा) प्राणी मात्र जगे है । उसके लिये संयमी पुरुष (भगवान के भक्त) सोये है।

और इस कारण से ''भगवान के स्वरुप में मन की अखंड वृत्ति रखना इससे कठोर और बडा साधन कोई और नही ऐसा श्रीहरि ने बताया है।(ग.प्र.प्र.-१)

आश्चर्य जनक बात तो यह है कि प्रथम वचनामृत में कठिन साधना की बात कहे है । इसके बाद सभी २७२ वचनामृतो में भगवान के स्वरुप को मन की अखंड वृत्ति कैसे करे इस लिये भगवान के भक्त को क्या-क्या करना उसकी बात दूसरे रुप में समझाये है । भगवान के स्वरुपी की अखंड वृत्ति वाली ज्ञानदसा जिस हरि भक्त मे आ जाये । उसे कुछ भी नही करना है । वह अर्न्तदृष्टि से सब कार्य करता है । वाह्य दृष्टि से मात्र श्रीहरि के स्वरुप (नाम स्मरण) धीरे-धीरे करता है।

वचनामृत कहे या गीता - इस दोनो की फलश्रुति तो एक ही है । क्यो कि भगवान का भक्त होना और भगवान के भक्तो हो जाने के बाद श्रीहरि के स्वरुप को मन मे रखकर करना चाहिए।

गीता के आध्यात्मिक बात समझना थोडा कठिन है क्यो कि इस में श्रीकृष्ण परमात्मा अर्जुन का शोक दूर करने के लिये उपदेश दिये थे ।

जब कि श्रीहरि कथित वचनामृत में ''आप हमारे है यह जानकर कहे है '' हम सभी को श्रीहरिने सर्व प्रथम अपना बनाये है । बाद में छोटी-बडी सभाये किये । ज्ञानवार्ता को सरल भाव मे उदाहरण सहित, गीता के श्लोक-तुलसीकृत रामचरित मानस आदि चौपाई को देकर अध्यात्म को सरल करके दिये है।

वचनामृत का अध्ययन यदि निरंतर करे तो श्रीहरि के स्वरुप मे मन की अखंड वृत्ति (श्रीहरि नाम स्मरण) धीरे धीरे होगा । ऐसा यह सुंदर और पवित्र ग्रंथ है।

अपने हरि मंदिर तथा प्रसादी के स्थान (पोर वावोल देश)

श्री स्वामिनारायण मंदिर वावोल

- बिपीन एम. पटेल (कालीगाम)

गांधीनगर से मात्र पाँच किलोमटीर की दूरी पर स्थित पोर-वावोल देश में आये वावोल गाम के श्री स्वामिनारायण मंदिर के दर्शन और उसका इतिहास जाने।

वावोल गाम श्री नरनारायणदेव आश्रित और समर्पित सत्संग से चयनित गाँव है। गाँव में आंटो और तरपोज दो पहले के विभाग है। गाँव में प्रवेश करते ही सुंदर तालाब है। पटेलवास में प्रवेश करते ही नारायणेश्वर महादेव का सुंदर मंदिर आता है। वहाँ से आगे जाने पर नरनारायणदेव देश के अर्न्तगत श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनों) का आता है।

साथ ही साथ नया-भव्य भाईयो का श्री स्वामिनारायण स्थित है। इस मंदिर के लिये जमीन का दान श्री महाशंकर गोर (नागर ब्राह्मण) परिवारने किया था। जमीन के उपर मंदिर का निर्माण तथा प्रथम जीर्णोध्धार वि.स. १९५१ से स. १८९६ में किया गया था। उसमें मूर्ति प्रतिष्ठा इ.स. १९८४ में प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसाजी महाराजश्री के करकमलो द्वारा किया गया था।

दशगाम गोल की रचना करने वाले सद्‌गुरु महानुभावानंद स्वामी ईस गाँव में नियमित सत्संग कराते थे। इनेक अथक प्रयास से गाँव में १७५ वर्ष पहले श्री स्वामिनारायण मंदिर का निर्माण हुआ। तथा सत्संग समाज को यह मंदिर मिला। इसके बाद अ.नि. हरिजीवनदासजी स्वामीजी सत्संग का पोषण करते मंदरि का पुनः जीर्णोध्धार कराये थे।

मंदिर को बने १०५ वर्ष पूर्ण होने पर स.गु. शा. स्वामी नारायणवल्लभदासजी (पूर्व महंतश्री जेतलपुर) की प्रेरणा से पुनः जीर्णोध्धार कराया गया था। मंदिर में पुनः मूर्ति प्रतिष्ठा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के करकमलो द्वारा वि.स. २०५६ मे माघ वद-५ दिन गुरुवार ता. २४-२-२००० के दिन किया गया था।

श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनो का) निर्माण के लिये स.गु.शा. स्वामी विश्वप्रकाशदासजी स्वामी (वडनगर) और काकरिया के महंतश्री शा. स्वामी अभिषेकप्रसाददासजी स्वामी अधिक मेहनत किये थे। बहनो ने सत्संग का पोषण सांख्ययोगी माताये अ.नि. सूरजबा तथा अ.नि. झवेरबा ने अच्छे से किया था।

वावोल मंदिर की रजत जयंती महोत्सव ता. २४-०२-२०२५ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के शुभ सानिध्य में भव्य रुप मे मनाया गया। अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी आदि दामो से संत पधारे थे।

दंढाव्य देश विशेष कर पोर-वावोल क्षेत्र के सत्संग विकास मंदरि निर्माण के कार्य भी स.गु. शा. स्वामी नारायणवल्लभदासजी दिया जा रहा है।

मंदिर का रजत जयंती महोत्सव में प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री बहनो को दर्शन आशीर्वाद देने आयी थी। वावोल गाम में समावेश गांधीनगर म्युनिसिपालिटी होने के कारण गाँव का विकास अच्छा हुआ है। पोर-वावोल देश के श्री स्वामिनारायण मंदिर, वावोल के दर्शन का लाभ अवश्य ले।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

सभी हरिभक्तो की सुविधा के लिये

प.पू. आचार्य महाराजश्री एवम् समग्र धर्मकुल के संकल्प से अब

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के नये स्थापना दिन
हर वर्षे दि. २९ मार्च के दिन पर मनाया जायेगा

श्री स्वामिनारायण भगवान अहमदाबाद में निवास के समय रंगमहल में विराम करते समय वहाँ पर पानी पीने के लिये ।‘वदना’ का उपयोग करते थे । वह प्रसादी है । वर्तमान मे पुराणी स्वामी नारायणचरणदासजी गुरु जगपावनदासजी स्वामी प.पू. बडे महाराजश्री के दर्शन के लिये रखे है। वह ४ नंबर के हाल में रखा गया है।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री महाविष्णुयाग की सूची-मई-२०२५

ता. १७-०५-२०२५ प.भ. रूपलबेन योगेशभाई शाह – नडियाद

ता. १८-०५-२०२५ प.भ. मंगलदास द्वारकादास पटेल परिवार – हिरावाडी–बापुनगर.

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये – श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला ५/१०/२० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है ।

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं ।

સંપ્રદાયમાં એક માત્ર વ્યવસ્થા શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમમાં મહાપૂજા / મહાભિષેક નોંધાવવા સંપર્ક કરો.

મ્યુઝિયમ મોબાઈલઃ- ૯૮૭૯૫૪૯૫૯૭, પ.ભ. પરષોત્તમભાઈ - દાસભાઈ (બાપુનગર) : ૯૯૨૫૦૪૨૬૮૬

www.swaminarayanmuseum.org/com • email: swaminarayanmuseum@gmail.com

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से) एकादशी सत्संग सभा के अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "जीवन की सार्थकता भगवद प्राप्ति मे है"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

जीव एक आध्यात्मिक यात्रा के उपर है। यात्रा पूरी नही हुई है। आध्यात्मकि यात्रा अर्थात् क्या ? आध्यात्म अर्थात् आत्मा की तरफ प्रयाण करने के भ्रम को दूर करके आत्मा की सत्यता एवम् अविनाशिता की तरफ प्रयाण है। जब जीव संसार की वस्तुओ को भ्रामक रुप मे समझकर उसकी व्यर्थता को समझता है। तभी सच्ची दिशा मिलती है। इस मार्ग पर चलकर परमतत्व की प्राप्ति करता है। अध्यात्म एक अनंत यात्रा है। हम सभी भी यात्रा में है। आप इस संसार में प्रवास पर जाते है। यात्रा करते है। तो सर्वप्रथम स्थान, लक्ष्य निश्चित करते है ? कहाँ पर जाना है। बाद में साधन निश्चित करते है। तब पश्चात यात्रा प्रारम्भ करते है। इसी प्रकार अध्यात्म जगत के लिये पहले लक्ष्य बनाना पडता है। इस लक्ष्य को साध्य कहा जाता है। हमें साधक कहते है। साध्य तक जाने के लिये जिस उपाय का प्रयोग करते है। उसे 'साधना' कहते है। साधना अलग अलग प्रकार की हो सकती है।

साध्य एक होता है। साधना कई प्रकार की होती है। जैसे हम सभी मंदिर पर आये है। हम सभी का एक लक्ष्य है मंदिर पर आना लेकिन साधन अलग-अलग थे। कोई गाडी, रिक्सा, स्कूटी सभी मंदिर पर आये है। इसी प्रकार साधक की साधना भी अलग-अलग प्रकार की होती है। साधक की रुचि, प्रकृति और देशकाल परिकल साधना के रुप को बताते है। उदाहरण कोई यह कहे हम प्रतिदिन कालुपुर मंदिर नरनारायणदेव का दर्शनक रके जलपान करेगे। तो यह अहमदाबाद वालो के लिये अच्छा है। लंडन-अमेरिका वाले लोग ऐसा सोचे तो असम्भव है। नियम का पालन नही कर सकते है। ये लोग प्रतिदिन कालुपुर नही आ सकते है। यह देश काल का प्रभाव है। कुछ साधना भावप्रधान होता है। कुछ साधना 'बुद्धिप्रधान' होते है। कुछ साधना 'प्राणप्रधान' होते है। भाव प्रधान प्रेम का अग्रसर रखता है। पने आराध्य के प्रति प्रेम रखता है। किसी का भगवान के साथ पुत्र का भाव होते हा। किसी का पिता का भाव होता है। किसी का सखाभाव होता है। कोई गोपी भाव रखते है। बुद्दि प्रधान अच्छे शास्त्रो का अध्ययन करते है। विवेक के द्वारा सत्य-असत्य का भेद करके भगवान को प्राप्त करने का प्रयास करते है। प्राणप्रधान अर्थात् 'प्राणायाम' और 'योग' द्वारा चित्त की वृत्तियो का निरोध, समाधि लगाकर आत्म साक्षातकार करता है। इसी प्रकार साधनो की विभिन्नता होती है। कुछ लोग योगमार्ग द्वारा, ज्ञानमार्ग तथा भक्तिमार्ग तीनो से समन्वय करके मार्ग बनाते है। रुचि के अनुसार कुछ अच्छा, ग्रहण करे। बुद्धि द्वारा मध्य मार्ग अपनाते है। प्राणायाम करते है। शांत मन से शास्त्र को पढते है। भगवान की महिमा समझे और भक्ति करे। मुष्यता मन शांत होना चाहिए। इससे भगवान की महिमा समझ में आयेगी। यह परमात्मा प्राप्ति का साधन है।

आध्यात्मिक मार्ग की सीढी चढने से पहले बुद्धि योग आवश्यक है। बुद्धि में जब मंगलमय, संकल्प आता है तब बुद्धि योग बनता है। यह यात्रा प्रारंभ होने पर बुद्धि के पूरे संकल्प मंगलमय तथा सत्य की समझ वाले होते है। सत्य संकल्प पर ध्यान देना पडता है। घर से चलने पर मन मे विचार आता है कि आज मंदिर में थाल देना है। रास्ते में भूखा बच्चा रो रहा है। पैसे का थाल कराना भी मन मे है। और बच्चे को भोजन कराने का भी मन हो रहा है। वास्तव में भूखा है। यह जानकर आप क्या करेगे ? सर्व प्रथम भूखे को भोजन दे। भूखे को छोडकर यदि भगवान को थाली का भोग देगे तो भगवान खुश नही होगे। ऐसे संकल्प में सजग रहना चाहिए। कई बार जन्म लेने के बाद व्यक्ति को ज्ञात होता है कि यह जन्म किस लिये मिला है ? जन्म का उद्देश्य क्या है। मै कौन हूँ ? मेरे जीवन की सार्थकता क्या है। जब ऐसा विचार आये। तब पूर्व के जन्म के पुण्य और सत्संग के प्रताप से होता है। जीवन की सार्थकता भगवत प्राप्ति में है। जो जीव भाग्यशाली होता है। उसे ही यह विचार आता है। 'संत संकल्प' पुण्य और सत्संग तीनो का समन्वय होता है। तब ऐसा उत्तर मिलते है। बुद्धि को दृढ निश्य करके चित्त को भगवान के तरफ मोड देता है। इसके पश्चात जो भी साधना होगी। भगवत् प्राप्ति के लिये ही होगी। दृढ निश्चय से परिव्रतन आ जाता है। बुद्धि भी दृढ निश्चय वाली हो जाती है। इसी को बुद्धि योग भी कहते है। बुद्धि

ભાયલા (ધોળકા પ્રદેશ) નૂતન મંદિરમા મૂર્તિ પ્રાણ પ્રતિષ્ઠા કરતા
પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રી

ભાયલા મોગલધામ મંદિરમાં માં મોગલની આરતી ઉતારતા
પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રી

ભુજ મંદિરના ૨૦૨મા પાટોત્સવ પ્રસંગે ઠાકોરજીનો અભિષેક કરતા તથા ઠાકોરજીની અન્નકૂટ આરતી ઉતારતા પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રી

માણસા મંદિરના પાટોત્સવ પ્રસંગે ઠાકોરજીની અન્નકૂટ આરતી ઉતારતા તથા સભામાં આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રી

ધોળકા મંદિરના ૧૯૮ મા પાટોત્સવ પ્રસંગે ઠાકોરજીની અન્નકૂટ આરતી ઉતારતા તથા સભામાં ગુજરાતના પૂર્વ મંત્રી શ્રી ભૂપેન્દ્રભાઈ ચુડાસમાનું અભિવાદન કરતા પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રી

બોપલ મંદિરના પાટોત્સવ પ્રસંગે ઠાકોરજીની અન્નકૂટ આરતી ઉતારતા તથા સભામાં આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રી

વિસનગર નૂતન મંદિરનું ભૂમિપૂજન કરતા પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રી

બાપુપુરા મંદિરમાં સમૈયાના ઉપલક્ષમાં બાળકોની ક્રિકેટ ટીમ

મીઠાખળી મંદિરના ૬૬મા પાટોત્સવ પ્રસંગે ઠાકોરજીના અન્નકૂટ દર્શન તથા કથા કરતા સંતો

નવાવાડજ મંદિરમાં સમૈયા પ્રસંગે શિક્ષાપત્રી સભા

સમૈયાના ઉપલક્ષમાં સત્સંગ સભાઓ

મોટેરા

ગાંધીનગર

ધમાસણા

ન્યુ નિકોલ

શિલજ

પેથાપુર

બાપુનગર

સમૈયાના ઉપલક્ષમાં વિવિધ વસ્તુઓનું સાબલવાડ (ઈડર પ્રદેશ)માં વિતરણ કરતા હરિભક્ત

છપૈયા, વડનગર અને કાંકરિયા મંદિરમાં ચંદનના વાઘાના દર્શન

ગાંધીનગર (સેક્ટર-૨૩) મંદિરમાં સમૈયાના ઉપલક્ષમાં સભામાં ધૂન કીર્તન કરતા હરિભક્તો

પ.પૂ.મહારાજશ્રીની આજ્ઞાથી આપણો સંપ્રદાય હંમેશા સમાજના ઉત્કર્ષના કાર્યો માટે તત્પર રહે છે. હાલમાં સાબરમતી નદી સફાઈ અભિયાનમાં આપણા કાલુપુર મંદિરથી મોટી સંખ્યમાં યુવક યુવતીઓએ ભાગ લીધો હતો.

સંપ્રદાયનું ગૌરવ

આપણા ન્યુઝીલેન્ડ મંદિરના પાયાના પથ્થર ગણી શકાય તેવા પ.ભ. ડો. કાંતિભાઈ પટેલના ધર્મપત્ની રંજના બેનને હાલમાં બ્રિટિશર્સ અને ન્યુઝીલેન્ડના ગવર્નર દ્વારા ત્યાનું સર્વોચ્ચ સન્માન ''ડેમ'' થી સન્માનવામાં આવ્યા હતા. આ સન્માન તેમને ત્યાંની કોમ્યુનિટિમાં વર્ષોથી સરાહનીય સેવા કરવા બદલ પ્રાપ્ત થયું છે. પ.પૂ.ગાદીવાળાશ્રી તથા સમગ્ર ધર્મકુળે તેમને અંતરના આશીર્વાદ પાઠવ્યા છે.

योग के कौन से लक्षण होते है । ब्रह्मांड टूट जाये फिर भी संकल्प मे बदलाव नही आये । ऐसा दृढ निश्चय होना चाहिए । गंगा सती का भजन है ।

मेरु तो डगे पण जेना मनडा डगे नहि... पानबाई
भांगी रे पडे रे ब्रह्मांड.... मेरु.....
विपत्त पडे तोये वणशे नहि ने रे
होय हरिजन ना प्रमाण.... मेरु.....
हरखने शोकनी जेने आवो नहि हेडकी....रे.
आठेय प्रहर आनंद रे .... मेरु.....

अर्थात् किसी भी परिस्थिति में बुद्धि विचलित नही होता है । हर्ष-शोक मे समबुद्धि रहता है । आठ प्रहर आनंद मे रहते है । सत्संग के योग में लगातार रहते है । सतमार्ग के अलावा कुछ गलत मार्ग विचार में नही आता है । जगत सम्बधित कोई संकल्प-विकल्प दिमाग मे नही रहता है । ऐसा दृढ निश्य होने पर मनुष्य सक्षम हो जाता है । और आध्यत्मिक मार्ग पर सफलता प्राप्त करता है । पूरी तैयारी रखना पडता है । हम जब कभी बाहर जाते है तो कितनी तैयारी करते है । आरामदायक रास्ते से होकर जाते है । मार्ग मे किसी प्रकार का कष्ट नही हो उसका प्रबन्ध करके जाते है । नही तो उस व्यवस्था को पाने के लिये रास्ते में रुकना पडता है । इससे समय अधिक लगता है । इसी प्रकार भगवत प्राप्ति के मार्ग पर चलने से पूर्व प्राथमिक तैयारी करना अति आवश्यक है । कुछ छूट जाने पर पुनः वापस आना पडेगा । तथा साध्य को प्राप्त करने के लिये बार-बार जन्म लेना पडेगा । ऐसी तैयार करे कि यह जन्म अन्तिम जन्म हो । ऐसी साधना करे कि शेष रह ना जाये ।

जिस साधन से परमात्मा प्राप्ति होती है । वह आध्यात्मिक और अन्तिम लक्ष्य है ।

केवल निष्ठा से प्रयत्न करके । एक दिन सभी संकल्प पूर्ण होगे । शर्त इतनी है कि १००% शरणागति और दृढ निश्चय बुद्धि होनी चाहिए ।

•

कामना के अनुसार अलग-अलग देवताओ की उपासना तथा भगवतभक्ति श्रेष्ठता के निरुपण

- भावसार पल्लवीबेन विजयभाई (लाघणज)

शौनकजीने कहा : हे सुतजी ! राजा परीक्षितने शुकदेवजी की इस बात को सुनकर वह दूसरा क्या पूछे ? शुकदेवजी सर्वज्ञ होने के साथ मधुर-वर्णन करने में निपुण है । हे सूतजी ! आप तो सब कुछ जानते है । हमें प्रेम से उनकी कथा सुनना चाहते है । कृपा करके सुनाये । सत्पुरुषो की सभा में भगवान के चरित्र से पूर्ण कथा । अवश्य होती है । बंदन महारथी राजा परीक्षित महान भगवत भक्त थे । बालकपन में भी गेद खेलते समय भी भगवान कृष्ण की लीलाये खेलते ते । भगवतस्वरुप शुकदेवजी जन्म भगवत पारायण थे । यह संतो के समागम मे भगवान के मंगलमय गुणो की चर्चा अवश्य हुई होगी । जो मनुष्य भगवान के गुण कथा में समय व्यतीत नही करते । उनका जीवन सुबह और शाम क्षीण हो रहा है । क्या वृक्ष जिंदा नही रहते । क्यो लुहार की धौकनी श्वास नही लेती है । क्या गाँव के पालतु जानवर खाते-पीते या मैथुन नही करते है । किन मानव शरीर मे जनम लेने के बाद जिसके श्रवण मार्ग में कृष्ण लीला नही आयी है । उसे पशु, कुत्ते, सुअर और गधे जैसा पशु ही कहते है । हे सुतजी ! जो मनुष्य कभी भगवान श्रीकृष्ण की कथा सुनते नही उनका कानबेकार की तरह है । भगवान के लीलाओ का नही करने से जीभ मेढक समान है । ऐसी जीभ नही रहे तो अच्छी है । जो सिर कभी श्रीकृष्ण के चरणो में नत मस्तक नही होता है । वह सिर पगडी सहित भार वाला ही है । जो हाथ भगवान की सेवा पूजा नही करता है । वह हाथ यदि स्वर्णाभूषणो से युक्त हो तो भी मुर्दे के समान है । वह आँख जो भगवान की याद दिलाने वाले चित्रो, नदियो पर्वतो का दर्शन नही करती है वह आँख मोर के पंख परखने आँख के समान होती है । जो पैर भगवान के क्षेत्रो मे नही जाये । वह पैर पेड के जड समान होता है ।

जो मनुष्य कभी भगवत भक्त के चरणरज को प्राप्त नही करता जो जीवित होते हुए भी मुर्दे के समान होता है । जो मनुष्य भगवान के चरणो पर अर्पित तुलसी दल के सुगंध को नही लिया । वह साँस लेते हुए भी मुर्दे के समान है ।

हे सूतजी जो हृदय भगवान के मंगलमय नामो के श्रवण-कीर्तन से द्रवित नही हो तो वह हृदय पत्थर के समान है । जब हृदय द्रवित हो उठे, तब आँखो से आँसु निकलने लगते है । शरीर के रोम-रोम प्रफुलित हो जाते है ।

हे प्रिय सूतजी ! आप की वाणी हमारे हृदय को मधुरता से भर देती है । आप भगवान के भक्त और आत्मविद्या विशारद शुकदेवजी से परीक्षित ने जो उत्तम प्रश्न पूछे और उसका उत्तर शुकदेवजी राजा को कहे थे । उसे हमे कृपा पूर्वक हमे सुनाये ।

•

सती मंदोदरी

- ठक्कर वीणाबेन नरेन्द्रभाई (बोपल)

हिन्दु महाकाव्य अनुसार इस संसार में पाँच पवित्र सती मानी जाती है । अहिल्या, द्रौपदी, तारा, कुंती और मंदोदरी ।

यह पाँच नारियाँ विवाहित होने के बाद भी कन्या समान पवित्र मानी जातीहै । इनका प्रतिदिन नाम लेने से पाप नष्ट हो जाता है । मंदोदरी, तारा, अहिल्या रामायण के पात्र है । द्रौपदी, कुंती महाभारत के पात्र है ।

हिन्दू पौराणिक ग्रन्थो के अनुसार मंदोदरी 'मधुरा' नामकी स्वर्ग की अप्सरा थी । जो भगवान शिव से प्रेम करती थी । एक बार मधुरा शिवजी से मिलने कैलास पर्वत पर गयी । शिवजी ध्यान की स्थिति में अकेले ही थे । मधुरी शिव को अपने तरफ आकर्षित करने के लिये नृत्य गान करने लगी । उसी समय माँ पार्वती वहाँ आ गयी । मधुरा को नाचती देखकर श्राप दी कि तुम बारह वर्ष के लिये मेढ की बन जाये । माधुरीने माफी मागी । शिवजीने भी विनंती की, परिणाम स्वरुप माँ पार्वतीने कहा कि ''तुम एक कुवाँ मे १२ वर्ष तक तपस्या करेगी तो पाप मुक्त होकर वास्तविक रुप में आ जाओगी ।''

कश्यप ऋषि और दिदि के पुत्र माथासुर उनकी पत्नी हेमा संतान के लिये शिवजी की आराधना कर रहे थे । तभी आवाज आई । ''मुझे बाहर निकालो'' मायासुर ने मधुरा को बाहर निकाला (कुये मे से) शिवजी यह कन्या हमे भेट रुप मे मिली है । ऐसा समझकर उसका नाम ''मंदोदरी' रखे ।

मायासुर कई भी भवन-महल, मकान ईमारत बना सकता था । वह राक्षसो का 'विश्वकर्मा' कहा जाता है ।

एकबार रावण मायासुर से मिलने राजस्थान के भंडोर नगर में आया । उसकी नजद वहाँ मंदोदरी पर पडी । मंदोदरी की सुंदरता देखकर रावण मायासुर के पास मे मंदोदरी के साथ विवाह करने को कहा । राजस्थान में भंडोर रेलवे स्टेशन के पास एक जगह है । वहाँ पर रावण-मंदोदरी का विवाह हुआ । ऐसा माना जाता है । रावण के पास अन्य की पत्नियाँ थी । लेकिन सुंदरता देखकर मंदोदरी को लंका की 'महारानी' बनाया था । मंदोदरी पतिव्रता नारी थी । मंदोदरी को रावण द्वारा मेघनाथ और अक्षयकुमार दो पुत्र हुए थे ।

रावण कठिन तपस्या करके ब्रह्माजी के पास से सुर-असुर नही मार सके ऐसा वरदान प्राप्त कर लिया था । ब्रह्मा जी खुश होकर वरदान के साथ एक तीर दिये थे । वह तीर नाभि मे लगे तभी मृत्यु हो सके । रावण ने इस तीर को अपने सिंहासन के स्तम्भ में जगह बनाकर उसमे रख दिया था । यह बात मात्र मंदोदरी जानती थी ।

हनुमानजी सीता के खोज मे लंका जाते है । तब राम भक्त विभिषण के साथ बात करते हनुमानजी विभीषणसे रावण के मृत्यु का रहस्य पूछा । विभीषण तीर के बारे में बताते है । हनुमानजी मंदोदरी को विश्वास में लेकर बाण कहाँ पर छिपाया गया है । उसकी सूचना प्राप्त कर लिये । बाण को लेकर राम प्रभु को दे देते है । राम-रावण के युद्ध में श्रीराम उसी बाण से रावण को मारते है ।

जब रावणने सीता का हरण किया । तब भी मंदोदरी रावण से कहती है कि ''सीता एक पवित्र नारी है उसे राम को सौप दे नही तो लंका का नाश हो जायेगा ।''

श्रीराम प्रभु रावण की मृत्यु के बाद लंका का राज्य रावण के छोटेभाई जो सत्य, कर्तव्य निष्ट नीतिवान श्रीराम भक्त विभीषण को सौंप दिये । विभीषण लंका का राज अच्छे से किये । लंका के लोग खुश होकर श्रीराम के आभारी रहे ।

त्रेतायुग की ''लंका की महारानी'' धार्मिक, समर्पण भावी, विदूषी कर्तव्यनिष्ठ अप्सराकी लडकी कन्या समान पवित्र मंदोदरी को सती माना जाता है ।

यहहै भारत की नारी रत्न !

•

ध्रुववन

– लाभुबेन मनुभाई पटेल (कुंडाल)

महादेवजी तथा गंगाजी की सेवा स्वीकार करके तथा सेवा का लाभ देकर वर्णीराज आगे बढे ! फलफुल से युक्त वन में वन की सुंदर शोभा देखते-देखते अनंत जीवो के उद्धारक श्रीहरि चले जा रहे है । इस वन में ऋषि-मुनियो की रहने की गुफामे है । ऋषि मुनि तपस्या करते है । इसमे सेब, आम, केला के वृक्ष है । जो फलो से भरे है । वन्य के पशु भी श्रीहरि के दर्शन के लिये आते है । श्रीहरिको प्रणाम करके चले जाते है । आगे बढने पर ध्रुव वन आता है । पाँच वर्ष के बालक ध्रुव माँ के कहने पर जहाँ पर तप किये वही वन है । ध्रुव की याद आने पर स्वयं भी ध्रुवजी की तरह एक पैर पर खडे होकर ध्रुव की माता को धन्यवाद देते उनको याद करते है । माता हो तो एर्सा ! जो बेटे को सद्मार्ग बताये । सन्मार्ग पर चले ।

प्रत्येक व्यक्ति को अपने पुत्र - परिवार को ऐसा संस्कार देना चाहिए । जो देश, समाज तथा सत्संग के उपयोगी बने ।

आज भी इस स्थान पर मदाकिनी और अलकनंदा नदी का संगम है । यह स्थान 'रुद्र प्रयाग' नाम से जाना जाता है । संगम के किनारे सुंदर मंदिर है । जिसमे शंकरजी का अति सुरम्य स्वरुप विराजता है । इस स्थान पर नारदजी तपस्या किये है । नारद वन का भी दर्शन होता है ।

समैयो

के उपलक्ष्य में

"समैयो" के उपलक्ष्य में संतो द्वारा गाँव-गाँव में सत्संग-समाज लक्षीय क्रिया कलाप

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद तथा पू. महंत स्वामी स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के सुंदर प्रेरणा एवम् मार्गदर्शन से अपने आगामी शिक्षापत्री लेखन के २०० वर्ष को समैया के उपलक्ष्य में अपने निम्नलिखित गाँवो में संत-हरिभक्त द्वारा की गयी प्रवृत्तियाँ।

शिलज में शिक्षापत्री सत्संग सभा

अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत स्वामी स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी और संत मंडल द्वारा शीलज अहमदाबाद मे शिक्षापत्री लेखन के २०० वर्ष के समैया के उपलक्ष्य में ता. ३-५-२०२५ के दिन रात्रि मे ८ से ११ बजे तक सुंदर सत्संग सभा का प्रबन्ध शीलज मंदिर द्वारा किया गया था। इस में कई हरिभक्त तथा धर्मानुरागी भाविक भक्त सभा में पधारे थे। पू. महंत स्वामी और संतो ने अपने आने वाले उत्सव 'समैया' कि विस्तृत सूचना उसी के साथ पेम्पलेट, सुंदर अलौकिक 'शिक्षापत्री' प्रत्येक को देकर पाठ करने तथा मंत्र लेखन नोटबुक को वितरण किया गया। हरिभक्तो के उत्साह को देखकर संत खुब खुश हुए। बाद में सभी को अच्छा नास्ता प्रसाद में दिया गया था। (साधु दिव्यस्वरुपदासजी - कालुपुर मंदिर)

नवावाडज में शिक्षापत्री सत्संग सभा

नवा वाडज श्री स्वामिनारायण मंदिर में पू. महंत स्वामी स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (कालुपुर) के साथ आये संत मंडल आदि सभी उपस्थिति में नये वाडज श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा आयोजित शिक्षापत्री सत्संग सभा का सुंदर प्रबन्ध किया गया। पू. महंत स्वामी और संत आगामी शिक्षापत्री लेखन के २०० वर्ष के शिक्षापत्री महोत्सव ''समैया'' की विस्तृत सूचना सभी हरिभक्तो को अलौलिक शिक्षापत्री, महामंत्र लेखन नोट, पेन, पैम्पलेट आदि का वितरण किया गया था। सभी हरिभक्त ''समैया'' में अपनी सेवा के लिये उत्साही बने थे। रात्रि सभा के बाद हल्का नास्ता वितरण किया गया था।

प्रत्येक मास अन्तिम रविवार सत्संग सभा

सभा (१) ता. ३-५-२५ शनिवार श्लोक १ से २५ (२) ता. १-६-२५ रविवार श्लोक २६- से ५० तक। (३) ता. ६-७-२५ रविवार श्लोक ५१ से ७५। (४) ता. ३-८-२५ रविवार श्लोक ७६ से १००। (५) ता. ७-९-२५ रविवार श्लोक १०१ से १२५। (६) ता. ५-१०-२५ रविवार श्लोक १२५ से १५०। (७) ता. २-११-२५ रविवार श्लोक १५१ से १७५। (८) ता. ७-१२-२५ रविवार श्लोक १७६ से २००। (९) ता. ११-१-२५ रविवार श्लोक २०१ से २१२।

(कोठारीश्री नवा वाडज)

श्री स्वामिनारायण मंदिर धमासणा शिक्षापत्री सत्संग सभा

श्री स्वामिनारायण मंदिर धमासणा में ता. १७-५-२५ शनिवार के दिन रात्रि ८-३० पर अपने आगामी समैया के उपलक्ष्य में सत्संग सभा का सुंदर प्रबन्ध किया गया था। इस अवसर पर कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर से स.गु. भंडारी स्वामी जयप्रकासदासजी, शा. स्वा. आनंदस्वरुपदासजी, स.गु.शा.स्वा. सत्यसंकल्पदासजी (नारायणघाट महंतश्री) आदि संत मंडल आगामी शिक्षापत्री लेखन का २०० वर्ष के समैया के उफलक्ष्य में होने वाले धार्मिक, सामाजिक क्रिया कलाप की धोषणा की गयी थी। भाई-बहनो को पैम्पलेट मे बताये गये नियमो मे से योग्य लगे वह नियम ले। अलौकिक शिक्षापत्री, मंत्र लेखन, नोट, स्टिकर, किचेन, पेन आदि वस्तुए बाँटे गये थे। आज की इस सत्संग सभा के यजमान प.भ. शैलेषभाई रमणभाई पटेल परिवार धमासणा (वर्त. टी.पी. ४४) का पूर्ण प्रबंध श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, कोठारीश्री और पूरे गाँव ने किया था। रात्रि में सभी भक्तो को हल्का नास्ता प्रसाद रुप मे दिया गया था। (युवक मंडल - कोठारीश्री, धमासणा)

बापुपुरा गाँव में समैया के उपलक्ष्य में बालमंडल के क्रिकेट मैच

यहाँ बापुपुरा गाँव के प.भ. डॉ. जयेशभाई और श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा ''समैया'' के उपलक्ष्य मे बाल मंडल की क्रिकेट मैच का प्रबन्ध करके प्रत्येक खिलाडी को अपने समैया के बारे मे तथा आयोजित कार्यक्रम की ज्ञान कराया गया । बालको को छोटी अलौकिक शिक्षापत्री, पेन, किचेन, मंत्रलेखन नोट बुक आदि अनेक वस्तुए भेट मे दी गयी थी । अच्छे खेल के प्रबन्ध से बालको मे आपस मे प्रेम-लगाव लाया गया । इससे निकटता बढी थी । माणसा मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से ता. २३-५-२५ वैखाश वद एकादशी की ठाकुरजी का भव्य आम्रोत्सव आगामी समैया और जेतलपुरधाम के २०० वे उत्सव के लिये मनाया गाय । (कोठारीश्री बापुपुरा मंदिर)

समैया के उपलक्ष्य में साबलवाड (ईडर) गाँव में डोर टू डोर सत्संग

ईडर श्री स्वामिनारायण मंदिर के अर्न्तगत साबलवाड गाँव में शिक्षापत्री २०० वर्ष के समैया के उपलक्ष्य में स.गु. महंत शा. स्वा. सिध्धेश्वरदासजी की प्रेरणा से तथा पार्षद घनश्याम भगत के मार्गदर्शन से गाँव के उत्साही प.भ. हसमुखभाई साबलवाड गाँव में धरोहर जाकर 'समैया' का पैम्पलेट शिक्षापत्री, मंत्रलेखन, नोटबुक, पेन आदि का वितरण करके सभी को समैया की रुपरेखा समझायी गयी । (कोठारीश्री साबरवाड)

ईडर प्रदेश के भुरावास, वडगामडा-थेरासणा गाँव में शिक्षापत्री सत्संग सभा

श्री स्वामिनारायण मंदिर ईडर-टोरडा महंत शास्त्री स्वामी सिध्धेश्वरदासजी की प्रेरणा से २०० वर्ष का समैया के लिये भुरावास गांव में शिक्षापत्री घर सभा में ता. १८-५-२५ से ता. २०-५-२५ के मध्य ब्र. स्वामी अविनाशानंदजी सभी को उत्सव का महत्व समझाये । पार्षद श्री घनश्याम भगत ने शिक्षापत्री महोत्सव की कथा सुनाये । ता. २१-५-२५ के दिन वडगामडा और थेरासणा गाँव में सत्संग सभा हुई । अन्तिम दिन महंत शा. स्वामी सिध्धेश्वरदासजी तथा सभी भक्त समैया की रुपरेखा, प्रबन्ध की अच्छी जानकारी दिये थे ।

तीनो गाँवो में हर घर शिक्षापत्री, पैम्पलेट, महामंत्र, नोटबुक, पेन आदि का वितरण किया गया था । (पार्षद घनश्याम भगत - ईडर)

नेत्रामली (ईडर-प्रदेश) गाँव में शिक्षापत्री अमृतधारा पंचान्ह पारायण

नेत्रामणी गाँव में श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से शिक्षापत्री २०० वर्ष के समैया पर ११-५-२०२५ से १५-५-२०२५ तक शिक्षापत्री अमृतधारा पंचान्ह पारायण सां. कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर) के वक्ता पद से ५०० सत्संगि बहनो ने कथा श्रवण किये । कथा के मध्य श्री घनश्याम जन्मोत्सव, गादीपट्टाभिषेक, रासोत्सव अच्छे रुप से मनाया गया था ।

ता. १५-५-२०२५ के दिन यजमानश्री नीलाबेन कांतिभाई पटेल के आग्रह पूर्ण आमंत्रण से प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री पधारे थे । कथा में बिराजकर कथा सुनी सभी बहनो को खुश होकर आशीर्वाद दी थी । पूरे ईडर प्रदेश की बहने इस अवसर पर आयी थी । पूरा प्रसंग ईडर-टोरडा के महंत स.गु. शा. स्वामी सिध्धेश्वरदासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन और यहाँ के पार्षद घनश्याम भगत (नेत्रामणी) ने अच्छे से पूर्ण किये थे ।(कोठारीश्री - नेत्रामली)

गोता-वंदेमातरम् शिक्षापत्री सत्संग सभा

ता. ४-५-२५ के दिन गोता-वंदेमातरम् मे रात्रि को ८-३० बजे से ११ बजे तक शिक्षापत्री सत्संग सभा मनाया गया । इस अवसर पर पू. महंत स्वामी स.गु. शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी, स.गु. महंत शा. स्वा. यज्ञप्रकाशदासजी (कलोल-जमीयतपुरा) महंत शा. स्वा. उत्तमचरणदासजी (कलोल) आदि संत विस्तार के लोग समैया मनाने में उत्साह दिखाये थे । सभी भक्त अलौकिक शिक्षापत्री, पैम्पलेट, पेन आदि का वितरण करके भगवान की कथा वार्ता किये ।(एक हरिभक्त - गोता)

एप्रोच बापुनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर में समैया के उपलक्ष्य में सुदंरकांड पाठ

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद तथा पू. महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (कालुपुर मंदिर) की प्रेरणा से पू. महंत स्वामी स.गु. स्वामी धर्मस्वरुपदासजी (नाथद्वारा-पोरडा) के सुंदर मार्गदर्शन से प.भ.श्री प्रशांतभाई मोहनभाई पटेल (भाटेरा), चि. प्रांजलभाई तथा श्री अपूर्वभाई परिवार के यजमान पद से अपने आगामी ''समैया'' के उपलक्ष्य में

इंडिया कोलोनी एप्रोच रोड बापुनगर के अच्छे प्रबन्ध से सुंदरकांड पाठको ता. ३१-५-२०२५ शनिवार रात मे ८-३० से १०-३० तक किया गया था। पूरा प्रबन्ध यहाँ के महंत शा. स्वा. दिव्यप्रकाशदासजी और श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा किया गया था। (श्री न.ना.देव युवक मंडल - एप्रोच-बापुनगर)

कांकरियाधाम रामबाग मंदिर शिक्षापत्री सत्संग सभा

भगवान श्री स्वामिनारायण की परम कृपा से प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा एवम् आशीर्वाद से शिक्षापत्री समैया के उपलक्ष्य में मंहत शास्त्री स्वामी अभिषेकप्रसाददासजी द्वारा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा महिला मंडल कांकरिया के भक्ति युक्त प्रयास से प्रत्येक एकादशी को रात्रि में सत्संग सभा का मंगल आयोजन अमराईवाडी, गोमतीपुर, खोखरा तथा हरिभक्तो के घर-घर किया गया है। उसी प्रकार प्रत्येक शनिवार को रात में ९-३० से १०-३० तक हनुमानजी की कथा भी मंगल और कल्याण के लिये किया जाता है। इस प्रकार सत्संग की वृद्धि और शिक्षापत्री की समैया आने वाले वर्ष में उल्लास पूर्वक मनाया जाये। ऐसे सत्संग का प्रयास सर्वत्र श्री नरनारायणदेव गद्दी के अर्न्तगत मंदिरो में संतो द्वारा किया जा रहा है। कांकरिया मंदिर द्वारा होने वाली सत्संग की प्रवृत्तियो मे मंदिर के महंत स्वामी तथा शा. स्वामी नारायणवल्लभदासजी तथा शास्त्री स्वामी आनंदजीवनदासजी तथा स्वामी चंद्रप्रकाशदासजी भी सत्संग सभा में कथा-वार्ता का लाभ देकर हरिभक्तो को भावविभोर किये थे। (कोठारी स्वामी - कांकरिया)

गांधीनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर से-२३ "समैया" के उपलक्ष्य में भजन सत्र सम्मेलन

अपने आनेवाली शिक्षापत्री समैया के उपलक्ष्य में पू.स.गु. शास्त्री स्वामी श्रीहरिकेशवदासजी के दिव्य आशीर्वाद तथा स.गु. शा. स्वा. हरिप्रियदासजी की प्रेरणा से तथा श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर से-२३ में एकादशी को शायं विशेष भजन का सुंदर प्रबन्ध किया गया था। जिस में समूह प्रार्थना, स्त्रोत पाठ १०८, जनमंगल पाठ नामावलि, शिक्षापत्री पूजन, चोरसपद, संकीर्तन और महामंत्र धुन आदि में हरिभक्त अधिक संख्या में लाभ लिये थे। अपने मंत्र लेखन की नोटबुक आदि प्रत्येक भक्तो को दी गयी थी। (शा. हरिप्रिय स्वामी से-२३ गांधीनगर)

एप्रोच (बापुनगर) मंदिर द्वारा शिक्षापत्री सभा (संकल्प सभा-२१) ता. २४-०५-२०२५

पू. महंत स्वामी स.गु. शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकासदासजी के मार्गदर्शन तथा एप्रोच मंदिर के पू. महंत स.गु. शा. स्वामी दिव्यप्रकाशदासजी की प्रेरणा से प.भ. परसोतमभाई भीमजीभाई लहेरी वर्त. श्री हिमंतभाई, श्री मगनभाई और श्री सुरेशभाई आदि परिवार यजमान पद से अपने आने वाले उत्सव समैया के उपलक्ष्य में श्री स्वामिनारायण मंदिर बापुनगर एप्रोच द्वारा ता. २४-५-२५ शनिवार रात ८-३० से ११ बजे तक शिक्षापत्री श्लोक विवेचन सभा का सुंदर प्रबन्ध किया गया था। इस अवसर पर पू. महंत स्वामी स.गु. सा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी, स.गु. शा. स्वा. वासुदेवचरणदासजी (पोरडा), स.गु. महंत शा. स्वामी दिव्यप्रकाशदासजी, कोठारी बालु स्वामी आदि संत मंडल ''समैया'' और उसके उपलक्ष्य में होने वाले सभी प्रवृत्तियो की सूचना और शिक्षापत्री का महत्व समझाये थे। प्रत्येक भक्त को ''समैया'' की किट भेट में दी गयी थी। (कोठारीश्री - एप्रोच मंदिर)

न्यु निकोल मे शिक्षापत्री सत्संग सभा (संकल्प-२२) ता. २५-५-२५

न्यु निकोल में पू. महंत स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (कालुपुर) के मार्गदर्शन से तथा स.गु. महंत शा. स्वामी दिव्यप्रकाशदासजी की प्रेरणा से नये निकोल समस्त सत्संग समाज श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के अच्छे प्रबन्ध से तथा प.भ. किशोरभाई झवेरभाई फिणविया परिवार के यजमान पद से यहाँ न्यु निकोल में ता. २५-५-२०२५ के शिक्षापत्री सत्संग सभा (संकल्प-२२) भव्यता से मनाया गया। इस अवसर पर पू. महंत स्वामी स.गु. शा. स्वा. वासुदेवचरणदासजी, स.गु.शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (पोरडा) कालुपुर मंदिर से पू. जे.पी. स्वामी आदि कई संत पधारे थे। और हजारो हरिभक्त आने वाले ''समैया'' के उपलक्ष्य में अति महत्वपूर्ण रुपरेखा और जीवन मे उतारने जैसे वक्ताओने किया था। (श्री न.ना.देव युवक मंडल - न्यु निकोल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मणीपुरा (कडी - खाखरीया प्रदेश) दशाब्दी पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर मणीपुरा (कडी) की दशाब्दी पाटोत्सव गाँव के सभी हरिभक्तो के साथ सहयोग से उल्लासपूर्वक मनाया गया । ता. २४-५-२०२५ शनिवार को रात अहमदाबाद मंदिर के पूज्य महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी, स.गु. महंत शा. स्वामी सत्यसंकल्पदासजी (नारायणघाट) आदि संत मंडल की उपस्थिति में समैया में शिक्षापत्री सभा का सुंदर प्रबन्ध किया गया था । गाँव के सभी हरिभक्तोने अलौकिक लाभ लिया था । (धनपतभाई पटेल)

सिद्धपुर मंदिर द्वारा शिक्षापत्री सत्संग सभा की प्रवृतियाँ

विहबार (गेरिता देश) सिद्धपुर (ऊँझा देश) में हुई सभा ये स.गु. महंत शा. स्वा. कुंजविहारीदासजी (सिद्धपुर-खाण) द्वारा निम्न गाँवो में समैया के अवसर पर सभा वीजापुर, वजापुर, सापुर, हाथीपुरा, सांकापुरा, रणछोडपुरा, भीमपुरा, सिद्धपुर, ऊँझा पंचवटी, ऊँझा ब्राह्मण शेरी, चाणस्मा, पाटण, मंडलेप, शिरोही, खाण (राज.) आदि गाँवो में समैया के उफलक्ष्य में महापूजा के ६० पाटला लिखवाये थे । समैया के अवसर पर खाण और सिद्धपुर मंदिर मे आम्रोत्सव मनाया गया था ।(कोठारी स्वामी - सिद्धपुर)

स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी के जनमस्थान खाणधाम (राज.) अहमदाबदा से एस.टी. बस सेवा प्रारम्भ

स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी के जन्म स्थान खाण (राज.) दर्शनार्थियो को जाने के लिये एस.टी. बस प्रारम्भ की गयी है । अहमदाबाद से जीरावल प्लेट फार्म नं.१७ से दोपहर २-३० बजे चलेगी । जो खाण मंदिर के गेट के पास शायं उतार देगी । और दूसरे दिन प्रातः ६-३० पर खाण से चलेगी दोपहर १ बजे अहमदाबाद आयेगी ।

•

सिद्धपुर तथा खाण (राज.) मंदिर जाने वाले हरिभक्तो के लिये सूचना

सभी हरिभक्तो को सूचित किया जाता है कि आप सिद्धपुर और खाण मंदिर के दर्शन के लिये जाये । तो व्यवस्था के लिये निम्न लिखित फोन पर बात करके रहने तथा भोजन व्यवस्था करा सके ।

मो. : ९२६५२४०६६८ (सिद्धपुर)

मो. : ९३२८८५२६६५ (खाण)

गांधीनगर (से-२) श्री स्वामिनारायण मदिर "समैया" के उपलक्ष्य में शिक्षापत्री सत्संग सभा

श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (से-२) में पू. महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से और स.गु. महंत शा. स्वामी देवप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन से ता. २३-५-२५ अपरा एकादशी के दिन शिक्षापत्री सत्संग सभा का भव्य प्रबन्ध किया गया था । जिस में नारायणघाट मंदिर के महंत स.गु. शास्त्री स्वामी सत्यसंकल्पदासजी तथा अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी के शिष्य स्वामी दिव्यस्वरुपदासजी आदि संतोने अपने आने वाले ''समैया'' के उपलक्ष्य में आयोजित अनेक कार्यक्रमो की सूचना के साथ शिक्षापत्री के महत्व को हरिभक्त को समझाये । गायक कलाकार श्री जयेसभाई सोनी और साथी कलाकारोने कीर्तन भक्ति के गीत गाये । अन्ततः अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत स्वामीने आशीर्वाद दिया । गांधीनगर से अधिक संख्या में हरिभक्तोने धुन-कीर्तन कथा वार्ता का लाभ उठाये थे । २५० जितने बहनोने ५१ हजार शिक्षापत्री का पाठ करने का नियम लिये । धामोधाम से संत पधारे थे ।(बिपीनभाई पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर सापावाडा महामंत्र धून

स.गु. महंत स्वामी अनिरुद्धदासजी तथा सुखनंदन स्वामी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर सापावाडा समैया के अवसर पर १५-४-२०२५ से ता. १४-५-२०२५ तक एक मास तक पूरे गाँव के हरिभक्तोने श्री स्वामिनारायण महामंत्र का निज मंदिर में १ घंटे तक नित्य धुन किये । (ईश्वरभाई पटेल - केशियरश्री)

मंदिरो के मूल पाटोत्सव के लिये सूचना

श्री नरनारायणदवे के अर्न्तगत अपने कई पुराने मंदिरो का जीणोद्धार अथवा नवीनीकरण हुआ । जिस समय देव की ठाकुर की प्राण प्रतिष्ठा हुई हो वही तिथी रखी जाये । इस में कोई परिवर्तन नही किया जाये । जिसका सभी संत हरिभक्त ध्यान दे ।

– आज्ञा से

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर वैशाख सुद-१५ सत्संग सभा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से पू. महंत स्वामी स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर मे परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में प्रत्येक पूर्णिमा को भव्य सत्संग सभा का प्रबन्ध रहता है। जिस में गाँव एव शहर से हरिभक्त आकर लाभ उठाते है। वैशाख सुद-१५ के सत्संग सभा में स.गु. शास्त्री स्वामी श्रीजीस्वरुपदासजी के वक्ता पद से पूर्ण की गयी । प.पू. लालजी महाराजश्रीने ठाकुर का दर्शन करके सभा में विराजकर कथा सुने तथा सभी हरिभक्तो को आशीर्वाद दिये । इस अवसर का संचालन स.गु. कोठारी शास्त्री स्वामी नारायणमुनिदासजी अच्छे से किये थे । (कोठारी स्वामी - कालुपुर मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हर्षद कोलोनी वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से पू. महंत स्वामी स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से प.भ. श्री दासभाई, श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा आयोजित श्री हर्षद कोलोनी मंदिर का साँतवा वार्षिक पाटोत्सव ता. १८-५-२५ दिन रविवार को उल्लास पूर्वक मनाया गया था।

जिसके अर्न्तगत समूह महापूजा, अन्नकूट तथा ''समैया'' के उपलक्ष्य में भोजन प्रसाद का प्रबन्ध था । इस अवसर पर शा. स्वामी सत्यसंकल्पदासजी (नारायणघाट) शिक्षापत्री के विषय में समझाये । शा. स्वामी दिव्यप्रकाशदासजी (एप्रोच-बापुनगर) तथा शा. स्वामी वासुदेवचरणदासजी (पोरडा), कोठारी पू. बालु स्वामी (कालुपुर) आदि संतो ने आशीर्वाद दिया।

प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री पधारकर बहनो को दर्शन-आशीर्वाद का दिव्य सुख देकर शोभा बढायी थी।

महापूजा के मुख्य यजमान प.भ. संजयभाई बारोट के साथ यजमानश्रीओ का सम्मान किया गया था । (गोरधनभाई वी. सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनोका) भायला मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से धोलका श्री मोरली मनोहर प्रदेश के स.गु. महानुभावानंद स्वामी जैसे महान संत विभूति जो दो मंजिले का भव्य हरिमंदिर बनाया। कई वर्षो के पुनः नूतन मंदिर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा आशीर्वाद से तथा धोलका मंदिर के महंत स्वामी सत्यसंकल्पदासजी की प्रेरणा से तथा अहमदाबाद मंदिर के पूज्य महंत स्वामी स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन से और गाँव के श्री नरनारायणदेव के निष्ठावान हरिभक्त और कोठारीश्री आदि के आर्थिक सहयोग से नूतन भव्य मंदिर पूर्ण हुआ । ता. ७-५-२०२५ से ९-५-२०२५ तक सम्प्रदाय के सुप्रसिद्ध कथाकार पू.सगु. शा. स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) के वक्तापद से त्रिदिवसीय श्रीहरियज्ञ का कथा श्रवण हजारो कथा प्रेमी किये।

ता. ९-५-२०२५ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा नये मंदिर में ठाकुरजी की पुनः मूर्ति प्रतिष्ठा अच्छे से पूर्ण की गयी । पूरा भायला गाँव प.पू. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से धन्य हुआ । (सुरेशचंद्र पूजारा)

श्रीहरि प्रतिष्ठीत श्री स्वामिनारायण मंदिर धोलका १९८ का वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से धोलका मंदिर के महंत स.गु. स्वा. सत्यसंकल्पदासजी की प्रेरणा से प.भ. डॉ. परेशभाई एन. पूजारा परिवार यजमान पद पर धोलका मंदिर में विराजमान श्री मोरली मनोहरदेव हरिकृष्ण महाराज के १९८ वे वार्षिक पाटोत्सव को उल्लास पूर्वक मनाये।

इस अवसर पर ता. १३-५-२५ से १७-५-२५ के मध्य ''धोलका देश की लीला'' पंचान्ह पारायण शास्त्री

स्वामी अभयप्रकाशदासजी के वक्तापद से की गयी । ता. १३-५-२५ के दिन प.भ. बहादुरसिंह के निवास स्थान से १९८ पोथियो के साथ पोथीयात्रा उल्लासपूर्वक निज मंदिर तक आयी ।

वैशाख वद-५ ता. १७-५-२५ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा श्री मोरली मनोहर देव हरिकृष्ण महाराज के पाटोत्सव श्रृंगार की आरती की गयी । सभा में विराजकर इस देव की आगामी द्विशताब्दी महोत्सव अधिक उल्लास से मनाया जाये । ऐसी प्रेरणा और आशीर्वाद दिये ।(पूजारा सुरेशभाई)

सिमेज श्री स्वामिनारायण मंदिर पुनः मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा

धोलका श्री मोरली मनोहरदेव हरिकृष्ण महाराज के प्रदेश सिमेज गाँव में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से धोलका मंदिर के महंत स्वामी सत्यसंकल्पदासजीने हरिभक्तो के सुंदर साथ-सहयोग से मंदिर का सिंहासन नूतन एवम् ठाकोरजी की पुन मूर्ति स्थापना धोलका मंदिर के पाटोत्सव के दिन ता. १७-५-२५ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा किया गया । तीन दिन का श्रीहरियज्ञ का अच्छा प्रबन्ध किया गया था ।इस अवसर के यजमान प.भ. कालुभाई कुबेरभाई पटेल परिवार ने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री को खुश करके आशीर्वाद प्राप्त किये थे ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर पालडी-कांकज का १९ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद जेतलपुरधाम के पू. महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी, पू. शा. स्वा. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से वहाँ के महंत स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी के अच्छे प्रबन्ध से श्री स्वामिनारायण मंदिर पालडी-कांकज का १९ वाँ वार्षिक पाटोत्सव ता. २१-४-२०२५ के दिन अच्छे से मनाया गया । इस अवसर पर जेतलपुरधाम से महंत स्वा. कृष्णप्रकाशदासजी, ब्र. शा. स्वामी हरिस्वरुपानंदजी (ट्रस्टीश्री कालुपुर मंदिर), ब्र. स्वा. पवित्रानंदजी, शा. स्वा. प्रेमप्रकाशदासजी आदि संत मंडल कथा-वार्ता करके ठाकुरजी को अन्नकूट आरती उतारे तथा हरिभक्तो को खुश किये ।(साधु जनमंगलदास - जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटण मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद जेतलपुरधाम के पू. महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी, यहाँ के मंदिर के निर्माता पू. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा तथा स.गु. महंत स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी , महंत स्वामी विश्वप्रकासदासजी के अच्छे प्रबन्ध से पाटण शहर मे नवीन भव्य श्री स्वामिनारायण मदिर पूर्ण होते ही ता. २०-४-२०२५ से ता. २६-४-२०२५ तक मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण स.गु. महंत शा. स्वा. भक्तिनंदनदासजी (बावला) के वक्ता पद से पाटणवासी कथा सुने थे । ता. २६-४-२०२५ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा नये मंदिर मे ठाकुरजी की मूर्ति प्रतिष्ठा वेदोक्त विधि से की गयी ।इस अवसर पर पाटण शहर के श्री बाल घनश्याम मंडल, श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की स्थापना प.पू. महाराजश्रीने किया । बाल मंडल की सभा प्रत्येक रविार को १० से ११ बजे तक होगी । (पाटण कोठारीश्री - स्वामी जनमंगलदास - जेतलपुर)

जेतलपुरधाम द्विशताब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में टोरडाधाम में अखंड धुन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद जेतलपुरधाम के पू. महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी की प्रेरणा से जेतलपुरधाम निवासी श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज का २०० वर्ष के द्विशताब्दी महोत्सव के अवसर पर महंत स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी, महंत स्वामी विश्वप्रकाशदासजी, महंत शा. स्वा. भक्तिनंदनदासजी के अच्छे प्रबन्ध से टोरडाधाम में ता. २७-४-२०२५ के दिन श्री स्वामिनारायण महामंत्र की १२ घंटे की धुन मू.अ.मू. गोपालानंद स्वामी के जन्म स्थान पर किया गया । जिस में नारणपुरा, जेतलपुर, ट्रेन्ट, कालियाणा, सीतापुर, बावला, विरमगाम आदि गाँवो से १५०० जितने हरिभक्त धुन का लाभ लिये थे । इस पूरे अवसर पर टोरडा मंदिर के महंत स.गु. शा. स्वा. सिद्धेश्वरदासजी और उनका मंडल अच्छा कार्य किया था । (साधु जनमंगलदास - जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर सादरा (वासणा) का ९ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद जेतलपुरधाम के पू. महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी, पू. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से स.गु. महंत स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी के अच्छे प्रबन्ध से श्री स्वामिनारायण मंदिर सादरा (वासणा) का ९ वाँ वार्षिक पाटोत्सव ता. ३-५-२०२५ के दिन अच्छे से मनाया गया था । इस अवसर पर जेतलपुरधाम के साधु जनमंगलदास, साधु हरिनारायणदास, हरिभक्तो को कथा-वार्ता एवम् धुन सुनाकर ठाकुरजी के पाटोत्सव की आरती उतारे थे । (कोठारीश्री सादरा-स्वामी जनमंगलदास - जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर राबडिया का १४ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद जेतलपुरधाम के पू. महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी, पू. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से स.गु. महंत स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी के अच्छे प्रबन्ध से राबडिया श्री स्वामिनारायण मंदिर का १४ वाँ पाटोत्व उल्लास पूर्वक मनाया गया था । जेतलपुरधाम से शा. जनमंगल स्वामी, शा. हरिनारायण स्वामी पधारे थे । कथा वार्ता करके आरती उतारे थे । पाटोत्सव के यजमान प.भ. विनोदभाई नटवरभाई ने अच्छा लाभ लिये थे । आगामी १५ वाँ पाटोत्सव प.पू. आचार्यश्रीके आज्ञा से उल्लास पूर्वक मनाने का प्रबंध किये है । (साधु जनमंगलदास - जेतलपुरधाम)

जेदलपुरधाम के द्विशताब्दी महोत्सव के अवसर पर ट्रेन्ट गाँव में २०० घंटे की महामंत्र धून

जेतलपुरधाम मे विराजमान महाप्रतापी श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज का आगामी वर्ष प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से तथा प.पू. भविष्य के आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की अध्यक्षता में द्विशताब्दी महोत्सव मनाया जायेगा । इसके उपलक्ष्य में ता. ९-५-२०२५ के दिन ट्रेन्ट गाँव में श्री स्वामिनारायण मंदिर में २०० घंटे का श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून की पूर्णाहुति के अवसर पर जेतलपुरधाम से पू. महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी संत मंडल के साथ पधार कर उत्सव की रुपरेखा समझाकर धून की पूर्णाहुति आरती उतारे थे । (साधु जनमंगलदास - जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर गामडी का १९६ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद जेतलपुरधाम के पू. महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी, पू. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से स.गु. महंत स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी के अच्छे प्रबन्ध से गामडी श्री स्वामिनारायण मंदिर का १९६ वाँ पाटोत्सव और बहनो के मंदिर का ७ वाँ पाटोत्सव ता. २-५-२०२५ के दिन उल्लास पूर्वक मनाया गया था । इस अवसर पर जेतलपुरधाम से पू. महंत शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी, स.गु. ब्र. स्वामी वासुदेवानंदजी, ब्र. शा. स्वामी हरिस्वरुपानंदजी (ट्रस्टीश्री कालुपुर मंदिर), स.गु. स्वामी विश्वप्रकाशदासजी (ट्रस्टीश्री कालुपुर मंदिर) आदि संत मंडल कथा-वार्ता किये थे । महापूजा, ठाकुरजी का अभिषेक, अन्नकूट आदि का हरिभक्तोने लाभ लिया था । पाटोत्सव के यजमान प.भ घनश्यामभाई ईश्वरभाई पटेल परिवार ने लाभ लिया था । (साधु जनमंगलदास - जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मेरानीमुवाडी का १५ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद जेतलपुरधाम के पू. महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी, पू. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से स.गु. महंत स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी के अच्छे प्रबन्ध से श्री स्वामिनारायण मंदिर मेरानीमुवाडी का १५ वाँ वार्षिक पाटोत्सव उल्लास पूर्वक मनाया गया था । जेतलपुर धाम से शा. स्वा. रामेश्वरानंदजी आदि संत मंडल पधारकर कथा-वार्ता करके ठाकुरजी की आरती उतारकर हरिभक्तो को लाभ दिये थे । पाटोत्सव के यजमान पद का पूरा लाभ लिये । (कोठारीश्री मेरानी मुवाडी -साधु जनमंगलदास - जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मोटप पुनः मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद जेतलपुरधाम के पू. महंत स.गु. शा. स्वामी

आत्मप्रकाशदासजी, पू. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से स.गु. महंत स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी के अच्छे प्रबन्ध से श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनोके लिये) सुंदर भव्य निर्माण कार्य पूर्ण हुआ। ता. २-५-२५ से ६-५-२५ तक मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव मनाया गया। इस अवसर पर पाँच दिन का श्रीमद् भागवत पारायण स.गु. महंत शास्त्री स्वामी भक्तिनंदनदासजी के वक्तपद से की गयी। मूर्ति प्रतिष्ठा के मुख्य यजमान अ.नि. प.भ. करशनदास रामचंद्रदास पटेल परिवार - ह. प.भ. केशवलाल छगनभाई पटेल तथा प.भ. जी.के. पटेल (ट्रस्टीश्री कालुपुर मंदिर) परिवारने महा अलौकिक लाभ उठाये थे। पूरे मोटप गाँव ने तन, मन, एवम् धन से सेवा दिये थए। ता. ६-५-२०२५ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा मूर्ति प्रतिष्ठा उल्लासपूर्वक की गयी। पूरे गाँव को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने आशीर्वाद दिया। (साधु जनमंगलदास - जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नवागाम (ता. कपडवंज)
१५ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद जेतलपुरधाम के पू. महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी, पू. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से स.गु. महंत स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी के अच्छे प्रबन्ध से श्री स्वामिनारायण मंदिर नवागाम (कपडवंज) के १५ वे पाटोत्सव ता. १७-५-२५ के दिन उल्लासपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर जेतलपुरधाम से महंत स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी, शा. स्वा. हरिप्रकाशदासजी (मनकसर महंतश्री), शा. स्वा. अक्षरप्रियदासजी आदि संत मंडल कथा-वार्ता करके ठाकुरजी की आरती उतारे थे। पाटोत्सव के यजमान प.भ. बालमुकुंदभाई, श्री गिरीशभाई, श्री भीखाभाई, श्री प्रविणभाई आदि हरिभक्तोने भाग लिया था। (साधु जनमंगलदास - जेतलपुरधाम)

भात गाँव में जेतलपुरधाम द्विशताब्दी महोत्सव के अवसर पर श्रीमद् भागवत पारायण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद जेतलपुरधाम के पू. महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी, पू. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से स.गु. महंत स्वामी पुरुषोत्तमचरणधासजी (दास स्वामी) के अच्छे प्रबन्ध से जेतलपुरधाम द्विशताब्दी महोत्सव के अवसर पर भात गाँव में ता. १३-५-२०२५ से ता. १७-५-२०२५ तक श्रीमद् भागवत पंचान्ह पारायण स.गु.शा. स्वा. भक्तिनंदनदासजी (बावला मंदिर के महंत) के वक्तापद से पूरा गाँव कथा सुना था। गाँ वके सभी भक्त यजमानोने भाग लिया था। (कोठारीश्री भात मंदिर)

बोपल श्री स्वामिनारायण मंदिर द्विदशाब्दी महोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से बोपल श्री स्वामिनारायण मंदिर का द्विदशाब्दी महोत्सव ता. २९-४-२०२५ से २-५-२०२५ तक अ.नि. खीमजीभाई भगवानदास पटेल परिवार के अ.नि. गोविंदभाई तथा प.भ. रतीभाई पटेल परिवार के यजमान पद से मनाया गया। इस अवसर पर श्रीमद् भागवत दश्म स्कंध पंचान्ह पारायण स.गु. स्वा. ध्यानप्रियदासजी के वक्ता पद से हुई। कथा के मध्य बाल मंच, बालिका मंड, युवति मंच, और महिला मंच द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम किये गये। इस अवसर पर प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री, प.पू.अ.सौ.लक्ष्मीस्वरुपा बडी गादीवालाश्री पधारे थे। बहनो को दर्शन देकर बहनो को खुश कर दी।

ठाकुरजी का अन्नकूट का प्रसाद अनाथालय के बच्चो मे वितरित किया गया था। यज्ञ का अच्छा प्रबन्ध भी था। वैशाख सुद-७ ता. ४-५-२५ के दिन ठाकुरजी का पाटोत्सव हुआ। इस अवसर पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे। अन्नकूट की आरती करके सभी को आशीर्वाद दिये। (प्रवीण उपाध्याय)

श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनो का) ईश्वरा का
३० वाँ वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. महंत स्वामी स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से तथा स.गु. शा. स्वा. देवप्रकाशदासजी (उनावा महंतश्री) के सुंदर प्रबन्ध से ईश्वरपुरा बहनो के श्री स्वामिनारायण मंदिर का ३० वाँ वार्षिक पाटोत्सव ता. २०-५-२०२५ के दिन उल्लास पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर ता. १७-५-२०२५ से ता. २०-५-२०२५ तक श्रीहरि स्मृति त्रिदिवयीस कथा स.गु. महंत शा. स्वामी दिव्यप्रकाशदासजी (एप्रोच बापुनगर) के वक्ता पद से हुई। इस में यजमान का लाभ समस्त महिला मंडल ने किया। पाटोत्सव के समय ठाकुरजी का अभिषेक, अन्नकूट

आरती संतो के करकमलो द्वारा पूर्ण किया गया था ।(राहुल चौधरी - ईश्वरपुरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर दोलाराणा वासणा पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद श्री स्वामिनारायण मंदिर दोलाराणा वासणा का पाटोत्सव ज्येष्ठ सुद-२ ता. २८-५-२०२५ के दिन उल्लासपूर्वक मनाया गया था । इस अवसर पर स.गु. महंत शास्त्री स्वामी नारायणवल्लभदासजी (वडनगर) उपस्थित रहकर ठाकुरजी का अभिषेक, अन्नकूट आरती, कथा वार्ता करके हरिभक्तो को खुश किये थे। पाटोत्सव के यजमान प.भ.अ.नि. रमेशभाई मणीलाल भावसार तथा उर्मिलाबेन रमेशभाई भावसार परिवार रहा था ।

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण हिन्दु मंदिर पारसीप के न्युजर्सी (आई.एस.एस.ओ.) (अमेरिका) दशाब्दी पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा एवम् प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से कांकरिया मंदिर के महंत स्वामी पू. शास्त्री स्वामी अभिषेकप्रसाददासजी, पार्षद महादेव भगत और यहाँ के हरिभक्तो के अच्छे प्रबंध से अपने हिन्दु श्री स्वामिनारायण मंदरि पारसीप की (न्युजर्सी आई.एस.एस.ओ.) के दशाब्दी पाटोत्सव महोत्सव ता. १८-५-२०२५ से २५-५-२०२५ के मध्य धर्मकुल के सानिध्य में भव्यता से मनाया गया था । इस अवसर पर श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण सम्प्रदाय के सुप्रसिद्ध पू. शास्त्री स्वामी श्रीरामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) के वक्ता पद से हजारो भक्तो ने सुना । ता. २४-५-२०२५ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के करकमलो द्वारा ठाकुरजी का षोडशोपचार महाभिषेक, अन्नकूट श्रृगार आरती की गयी । प.पू. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री ने सभा में सभी को आशीर्वाद दिये । इस अवसर पर प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री, प.पू. बिन्दु राजा, पू. सुव्रतकुमार, पू. सौम्यकुमार विशेषकर आये थे । अधिक संख्या में हरिभक्तो ने लाभ उठाया था ।

प.पू. महाराजश्री के आज्ञा से अपने आनेवाले समैया उत्सव में हरिभक्तो द्वारा सेवा दी गयी थी । धामो-धाम से संत पधारे थे । धर्मकुल की सेवा में हजूरी पार्षद वनराज भगत और पार्षद शैलेष भगत जुडे थे । (शा. अभिषेक स्वामी - कांकरिया महंतश्री)

नेशवील (अवधधाम-टेनेसी-आई.एस.एस.ओ. - अमेरिका) श्री स्वामिनारायण हिन्दु मंदिर मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा से प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण हिन्दु मंदिर नेशवील अवधधाम टेनेसी (आई.एस.एस.ओ. अमेरिका) ता. २१-५-२०२५ से २५-५-२०२५ तक मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव उल्लास पूर्वक मनाया गया था । इस अवसर पर पू. शा. राम स्वामी (कोटेश्वर), पू. शा. भक्तिनंदन स्वामी (जेत.), पू. शा. स्वामी सत्यस्वरुपदासजी और पू. शा. बड़े पी.बी. स्वामी (जेतलपुर) के वक्तापद से श्रीमद् भागवत पारायण हुई थी । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के करकमलो द्वारा ठाकुरजी की प्राण प्रतिष्ठा विधिवत रुप से की गयी । पूरे सभा को आशीर्वाद दिये । अपना आई.एस.एस.ओ. के सभी चैप्टरो में से कई हरिभक्त संत यहाँ पर पधारे थे । (प्रमुखश्री - नेशवील मंदिर)

श्री नरनारायणदेव देश के आगामी उत्सव

ज्येष्ठ वद-१२ रविवार ता. २२-६-२५ योगिनी एकादशी व्रत, वडनगर मंदिर पाटोत्सव ।

ज्येष्ठ वद-३० बुधवार ता. २५-६-२५ (अमावास्या) ।

अषाढ सुद-२ शुक्रवार ता. २७-६-२५ श्री जगन्नाथजी भगवान की रथयात्रा ।

अषाढ सुद-४ रविवार ता. २९-६-२५ अयोध्या श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव ।

अषाढ सुद-११ रविवार ता. ६-७-२५ देवशयनी एकादशी व्रत, चातुर्मास प्रारम्भ ।

अषाढ सुद-१५ गुरुवर ता. १०-७-२५ गुरु पूर्णिमा अहमदाबाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर मे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का ''गुरु पूजन'' ।

अषाढ वद-२ शनिवार ता. १२-७-२५ हिंडोला प्रारम्भ ।

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

फागण सुद-१ प.भ.अ.नि. नीतिनभाई गोपालदास शाह (मुंबई), प.भ. विठ्ठलभाई सोमाभाई पटेल (कलोल), प.भ. मुकुन्दभाई नटवरभाई पटेल (कायावरोहण), प.भ. भार्गव कौशिकभाई ठक्कर (बावला) । **फागण सुद-२** प.भ. गीरीशभाई के. पटेल (भाउपुरा) । **फागण सुद-३** प.भ. वल्लभभाई बालुभाई गढीया (गढडा), प.भ. मेघबाई भीमजी वेकरीया (नारायणपर-कच्छ), प.भ. अश्विनभाई पटेल (श्रीनरनारायणदेव पाटोत्सवना यजमान) (अहमदाबाद), प.भ. भानुबेन रमणभाई पटेल (गोठीब) । **फागण सुद-४** प.भ.अ.नि. विश्राम हरिभाई डबासीया (कच्छ-भुज), प.भ. अंबाबेन रमणभाई चौधरी (माणेकपर), प.भ.अ.नि. वशरामभाई नथुभाई सरसावाडीया (अहमदाबाद) । **फागण सुद-५** प.भ. करशन लालजी वेकरीया झाखणीया (मांडवी-कच्छ) । **फागण सुद-६** प.भ. रमणलाल लक्ष्मणदास जेठवा (अहमदाबाद) । **फागण सुद-७** प.भ. हिरलबेन मनीषकुमार रांदलपुरा (वडोदरा) । **फागण सुद-९** प.भ. किंजलबेन निरलकुमार (माणेकपुर) । **फागण सुद-१०** प.भ.अ.नि. चंद्रकान्तभाई गंगारामभाई ठक्कर (अहमदाबाद), प.भ. दिनेशभाई रवजीभाई धानाणी (सुरत), प.भ. दर्शनाबेन पटेल (राजकोट), प.भ. उमेशभाई धरमशीभाई मोरडीया (अंकलेश्वर), प.भ. मनजीभाई नाथाभाई संधाणी (बापुनगर), प.भ. शैलेषभाई जयंतीभाई पटेल (शिलज) । **फागण सुद-१२** प.भ. जयेशभाई हडीया (ओस्ट्रेलीया), प.भ. प्रविणभाई गोविंदभाई पटेल (पलियड), प.भ. नारणभाई जोईतनदास पटेल (वडु), प्रेमजी लक्ष्मण वरसाणी (मांडवी-कच्छ), अ.नि. स.गु. स्वा. निरन्नमुक्तदासजी (वकील स्वामी) (वडताल), प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नारायणपर-कच्छ), प.भ. शैलेषभाई भावसार (सरसपुर), प.भ.अ.नि. अरविंदभाई मफतभाई पटेल (डांगरवावाला) । **फागण सुद-१३** प.भ. सवजीभाई कल्याणभाई धानाणी (बापुनगर), सांख्ययोगी भारतीबा (हवेली), रेखाबेन कमलेशभाई (डिंगुचावाला) । **फागण सुद-१४** प.भ. रजनीकान्तभाई डाह्यालाल पटेल (कुंडाल), प.भ.अ.नि. परेशभाई बालुभाई पटेल (जमीयतपुरा), प.भ. मानव अरविंदभाई पटेल (गोठीब) । **फागण सुद-१५** प.भ. सतीषभाई गोपालभाई मोरडीया (सुरत) ।

फागण वद-१ प.भ. जगदीशभाई मावजी राघवाणी (बलदीया-कच्छ), गुजरात पाईप परिवार (बोडेली) । **फागण वद-२** प.भ.अ.नि. कंकुबेन मणीलाल कचरदास पटेल (विहार), प.भ. हर्ष नंदुभाई पटेल (उनावा), प.भ.अ.नि. बबुबेन बलदेवभाई पटेल, प.भ. वालजी रामजी वरसाणी (सामत्रा-कच्छ), प.भ. भोलीदास मोतीदास पटेल (झुलासण), प.भ.अ.नि. अंबालाल रामदास पटेल (सोजा), प.भ. दिलीपकुमार परसोतमभाई पटेल (बापुनगर), प.भ.अ.नि. भीमजी देवजी भूडीया (दहींसरा-कच्छ) । **फागण वद-३** प.भ.अ.नि. रमेशभाई गांगजी लाधाणी (सामत्रा-कच्छ), प.भ. उन्नतिबेन आर. भावसार (अहमदाबाद) । **फागण वद-४** प.भ.अ.नि. मणीलाल कचरदास पटेल (विहार), प.भ.अ.नि. रमीलाबेनना स्मरणार्थे (अहमदाबाद), प.भ. निकुल कालाभाई चौधरी (मकाखाड), प.भ.अ.नि. गोपाल नारण वरसाणी (भारासर-कच्छ), प.भ. मणीलाल शंकरदास पटेल (मोखासण), प.भ. धर्मेशभाई करशनभाई छभाडीया (मांडवी-कच्छ) । **फागण वद-५** गं.स्व. प्रेमीलाबेन रमेश लाधाणी (सामत्रा-कच्छ), प.भ.अ.नि. चतुरभाई सोमाभाई पटेल (पोर) । **फागण वद-६** गं.स्व. देविकाबेन कांतिलाल पटेल (सुखपर-रोहा-कच्छ), प.भ. जतीनभाई झवेरभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. अनिलभाई चतुरभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ.अ.नि. देवुबेन गोपाल वेकरीया (सुखपुर-कच्छ) । **फागण वद-७** प.भ.अ.नि. रवजी करशन वरसाणी (माधापर-कच्छ) । **फागण वद-८** प.भ. गोविंदभाई नानजीभाई । **फागण वद-९** प.भ. उपेन्द्रभाई बलदेवभाई सोनी (विरमगाम), प.भ.अ.नि. विज्याबेन वनमालीभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. कृष्णकुमार वाडीलाल पटेल (गोठीब), प.भ. प्रविणाबेन सुरेशभाई पारेख (अहमदाबाद), प.भ. गोविंदभाई देवजीभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. निर्मलभाई बाबुभाई कथीरीया (अहमदाबाद), प.भ. त्रिभोवनभाई लक्ष्मणभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. पार्थ मनहरभाई गांधी (नवा नरोडा), प.भ. कल्पेशभाई बी. पटेल (अहमदाबाद), प.भ. निखिल हसमुखभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. निताबेन अतितकुमार (अहमदाबाद) । **फागण वद-१०** प.भ. कृष्णभाई डाह्याभाई पटेल (देउसणा), प.भ. हरिप्रसाद माणेकलाल आचार्य (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. ठाकरशीभाई भीखाभाई केवडीया (सुरत), प.भ. सुरजकुमार वासुदेवभाई पटेल (अहमदाबाद) । **फागण वद-११** प.भ. रमणभाई जीजीदास पटेल (पलियड) । **फागण वद-१२/१३** प.भ. केतन हंसराजभाई नाकराणी (सुरत), प.भ. शैलेषभाई भावसार (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. तुलसीभाई रवजीभाई (राजकोट), प.भ. वैदेही पार्थकुमार त्रिवेदी (अहमदाबाद), प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नारायणपर-कच्छ), प.भ. गोपाल नारण वेकरीया (अहमदाबाद), प.भ. शिल्पाबेन अरविंदभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. लक्ष्मीकांत भीखाभाई पटेल (लसुन्द्रा), प.भ. तेजबाई कानजी वेकरीया (बलदीया-कच्छ) । **फागण वद-१४** प.भ.अ.नि. लालजी प्रेमजी भंडेरी (दहींसरा-कच्छ), प.भ. सागर नानदास वरसाणी (माधापर-कच्छ) । **फागण वद-३०** प.भ. बकुलभाई पूनमभई परमार (सिंधाली-पोरडा), प.भ.अ.नि. नानजी अरजण वरसाणी (मानकुवा-कच्छ)

अक्षरवास

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद के संत जिने सतत अहमदाबाद देश के गाँवो में नाम धर्मादा एकत्रीकरण की सेवा करते स.गु. शास्त्री स्वामी श्रीरंगदासजी गुरु स.गु. स्वामी हरिनारायणदासजी वैशाख वद-६/७ के ता. १९-५-२०२५ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते अक्षरनिवासी हुए है।

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद के संत स.गु. शास्त्री स्वामी श्रीकृष्णदासजी गुरु स.गु. स्वामी जानकीवल्लभदासजी (भचाउ-कच्छ) ता. ९-५-२०२५ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते अक्षरनिवासी हुए है।

Printed and Published by **Shastri Swami Purushottamprakashdasji** on behalf of **Shree Swaminarayan Temple** and **Published From :** Shree Swaminarayan Mandir Kalupur, Ahmedabad-380001. Printed at **Asian Printery**, Near Talati Hall, Raipur, Ahmedabad-380001.
Editor : Shastri Swami Purushottamprakashdasji

अहमदाबाद मंदिर में प्रत्येक पूनम को होने वाली सत्संग सभा में आशीर्वाद देते प.पू. लालजी महाराजश्री ।

अहमदाबाद मंदिर में संत महादीक्षा देने के बाद नव दीक्षीत संतो के साथ प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

कर्मशक्ति मंदिर के पाटोत्सव के अवसर पर ठाकरुजी की अन्नकूट आरती उतारते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

पारसीपनी (आई.एस.एस.ओ.) अमेरिका मंदिर के १० वे पाटोत्सव के अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक करते प.पू. महाराजश्री और सभा में दर्शन देते प.पू. लालजी महाराजश्री ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2024-2026
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2026

६ अपने नेशवील (अमेरिका आई.एस.एस.ओ.) मंदिर में मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा करते प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा
सभा में आशीर्वाद देते प.पू. लालजी महाराजश्री ।

Praful Kharsani